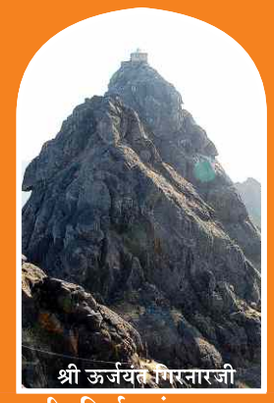

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2546

वर्ष : 10	अंक : 4	मुम्बई, नवम्बर 2019	पृष्ठ : 40	मूल्य : ₹25
VOLUME : 10	ISSUE : 4	MUMBAI, NOVEMBER 2019	PAGES : 40	PRICE : ₹25

अद्भुत शिल्पकला, श्री चन्द्रनाथार दिगम्बर जैन मंदिर, किलसाथमंगलम्, वंदवासी, जिला तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु)

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

नूतन वर्ष श्री वीर निर्वाण संवत् 2546 की हार्दिक शुभकामनाएँ

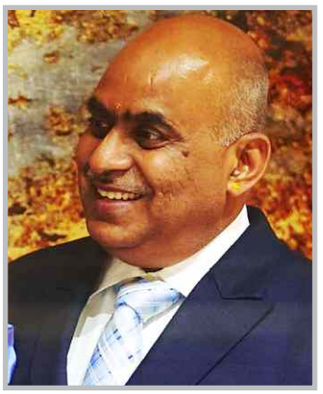

आज हमारे यहाँ अनेक प्रकार के पंचांग प्रचलित हैं, जिसमें विक्रम संवत सर्वाधिक प्रचलित है। वर्तमान में 2076वाँ संवत चल रहा है परंतु भारत का सबसे प्राचीन संवत् है श्री वीर निर्वाण संवत, जो भगवान् महावीर के निर्वाण के समय से आरंभ हुआ था। वीर निर्वाण संवत दुनिया के सभी प्रचलित संवतों में से सबसे प्राचीन संवत है। इस दीपावली से 2546वाँ वर्ष प्रारम्भ हो गया है।

मैं आप सब को अत्यंत हर्ष के साथ यह बताना चाहता हूँ कि इस वर्ष 22 अक्टूबर 2019 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने अपने सफल 117 वर्ष पूर्ण किये हैं । तीर्थक्षेत्र कमेटी आप सभी एवं सकल समाज के सहयोग से तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण संवर्धन का कार्य कर पा रही है इसलिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

तीर्थक्षेत्र हमारी जैन परम्परा के सबसे बड़े प्रतीक हैं, आने वाली पीढ़ी के लिए इन्हें सुरक्षित रखना हमारा दायित्त्व है । जिसमें शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी सबसे प्रमुख तीर्थस्थान है क्योंकि यह शाश्वत है, काल बदलतें रहेंगे, परन्तु तीर्थराज नहीं बदलेगा, जो अजर-अमर अनाधिनिधन है, न जाने कितने अरिहंतों ने यहाँ से सिद्धत्व की प्राप्ति की है और आगे करते रहेंगे, न जाने कितनी बार यहाँ से तीर्थंकरों के निर्वाण कल्याणक हुए और आगे होते रहेंगे, इस शाश्वत पर्वत पर देवता भी दर्शन-वंदन करने के लिए आते हैं। हमारा यह सौभाग्य है कि ऐसी परम-पावन भूमि पर हम पहुँच पा रहे हैं और हमारी भावना है कि उसे सुरक्षित रखने में अपना योगदान दे सकें।

सम्मेद शिखर जी में अभी भी बहुत से कार्यों को पूरा करने की आवश्यकता है। तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा एवं उन पर स्वच्छता बनाने रखने के लिए जगह-जगह बोर्ड लगाए जाते हैं, सूचनाओं के माध्यम से तीर्थयात्रियों को जागरुक किया जाता है लेकिन इस सबके बावजूद भी हमारे पावन तीर्थों पर गंदगी देखने को मिलती है, क्योंकि हम अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते हैं । हम वहाँ जितने दिन रहते हैं जिस धर्मशाला में ठहरते हैं वहाँ के कमरों का उपयोग करने के बाद उसे किसी अन्य होटल की तरह न समझते हुए गंदा न करते हुए साफ सुथरा छोड़ें। इसी तरह जब आप वंदना करने को शाश्वत पर्वत पर निकलते हैं तो कम से कम उस समय के लिए अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करें और पर्वत पर गंदगी न फैलाएं। एक अनुरोध और है कि साथ ही अन्य उपेक्षित तीर्थस्थानों पर समय-समय पर दर्शनों के लिए जाते रहें क्योंकि अनेक तीर्थ स्थान ऐसे हैं जो बहुत प्राचीन हैं पर वहाँ यात्री न पहुँचने के कारण मूर्तियों एवं मंदिरों की ठीक तरह से देखभाल नहीं हो पाती है और वहाँ अन्य धर्मावलंबियों का प्रभाव होने लगता है। हमारी उपेक्षा ही अन्य द्वारा अतिक्रमण का कारण बन जाती है।

ज्ञातव्य है कि सम्मेदशिखर जी में पिछले दिनों पर्वत पर यात्रियों के निधन की दुखद घटनाएँ घटी हैं जिसका हमें शोक है । आगे इस प्रकार की घटनाओं से बचने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी की पहल पर तीर्थराज शाश्वत सम्मेद शिखर ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार अजमेरा के प्रयासों से एंबुलेंस की स्वीकृति प्रशासन द्वारा मिल गयी है, नयी जीवनरक्षक एंबुलेंस शीघ्र डाक बंगले पर तीर्थयात्रियों के सेवार्थ उपलब्ध रहेगी। तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी पर अन्य कार्य प्रगति पर है जो तीर्थक्षेत्र कमेटी के अंतर्गत हो रहे हैं। विभिन्न टोंकों पर रंग-रोगन का कार्य, रास्तों का चौड़ीकरण, रैलिंग एवं साफ़-सफाई के लिए नयी कचरा पेटियों को लगाना आदि जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं, इसके अलावा अन्य तीर्थस्थानों पर भी विकास के कार्य प्रगति पर हैं। आप सभी प्राचीन व नवीन तीर्थों को ध्यान में रखते हुए लोगों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ने हेतु प्रेरित करें ताकि तीर्थक्षेत्र कमेटी अपना कार्य सफलतापूर्वक संचालित कर सके और तीर्थक्षेत्रों / प्राचीन मंदिरों के रखरखाव का कार्य हमेशा जारी रहे।

एक बार पुनः यह नया वर्ष आपके जीवन में खुशियों की बौछार लाये, मैं आप सभी को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से नवीन संवत् 2546 की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

देशभर से तमिलनाडु के प्राचीन जैन तीर्थक्षेत्रों की यात्राएँ आयोजित करें

दक्षिण भारत में तमिलनाडु प्राचीन समय में एक प्रमुख जैन केंद्र रहा है, यहाँ आज भी पुरातात्विक महत्व के सैकड़ों स्थान विद्यमान हैं। आप में से बहुत से लोगों को इस बात की जानकारी भी नहीं होगी कि भारत में तमिलनाडु राज्य में आज भी लगभग ४५० दिगम्बर जैन क्षेत्र हैं, जिनमें गुफाएँ हैं, मूर्तियाँ हैं, शिलालेख हैं, चतुर्थकालीन मुनियों के निवास स्थान बने हुए हैं, पत्थरों पर चिन्ह अंकित हैं और जहाँ मुनि निवास करते थे। वहाँ पर विशाल ग्रेनाइट की चट्टानों पर मूर्तियाँ उकेरी गई हुई हैं, और अक्सर यहाँ उत्खनन में जैन प्रतिमाएँ आदि मिलती रहती हैं।

तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में मदुरई जिला स्थित है जो एक समय दिगम्बर जैन मुनियों का सबसे बड़ा गढ़ रहा है, यहाँ पर मुनि निवास करते थे, उनका पूरे क्षेत्र में बहुत मान सम्मान था, उस समय के राजा जैन धर्म का पालन करते थे। यहाँ पर आज भी २६ प्राचीन दिगम्बर जैन गुफाएँ विद्यमान हैं, ये गुफाएँ ईस्वी की ८वीं शताब्दी से लेकर ईसा पूर्व ३री शताब्दी तक की हैं अर्थात कम से कम लगभग १२०० वर्ष प्राचीन और अधिकतम २३०० वर्ष प्राचीन हैं।

ये जैन धर्म के इतिहास की प्रमुख एवं महत्वपूर्ण धरोहरें हैं और इन सभी जगहों के बारे में देशबर के दिगम्बर जैन समाज के लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं है, क्योंकि मूल तमिल जैन की संख्या तमिलनाडू में लगभग ८५००० ही है और ये अत्यंत सरल व भद्र परिणामी होते हैं, सादगी से रहते हैं, ज्यादा पैसे वाले नहीं हैं। तमिलनाडू के क्षेत्रों का अधिक से अधिक प्रचार करने की आवश्यकता है और मैं यह चाहता हूँ कि अब जिस तरह लोग बुन्देलखंड, सम्मेद शिखर जी की यात्रा निकालते हैं, राजस्थान की यात्रा निकालते हैं, गुजरात, महाराष्ट्र की यात्रा निकालते हैं या उड़ीसा की यात्रा निकालते हैं, उतने ही विशेष रूप से तमिलनाडु की भी यात्राएँ निकाली जाएँ ताकि लोग ऐसे अद्भुत स्थानों के दर्शन कर सकें। उत्तर के हर राज्य से तमिलनाडु को केंद्र में रखकर यात्राएँ आयोजित की जायें ताकि जो अभी ४५० प्राचीन क्षेत्र, मंदिर/मूर्तियाँ, प्राचीन गुफाएं, शिलालेख एवं जितने भी जैनधर्म के प्रतीक हैं उनका उद्धार हो सके। यहाँ पर दो भट्टारक स्वामी जी के मठ भी हैं एक कांची मठ, मेलसित्तामूर में श्री लक्ष्मीसेन महास्वामी जी पीठाधिपति का कार्यभार संभाल रहे हैं और दूसरा अरिहन्तगिरि मठ है, जिसकी देखरेख भट्टारक स्वामी धवलकीर्ति जी के द्वारा की जाती है, दोनों ही मठ जैन धर्म के संरक्षण का कार्य कर रहे हैं। तमिल जैन लोग, भारत में जैन धर्म के दिगंबर संप्रदाय के महत्वपूर्ण भाग हैं, उन्हें हमारे स्नेह, आत्मीयता और सम्मान की जरूरत है। अतः सकल समाज से निवेदन है कि ऐसे परम-पावन तीर्थ क्षेत्र की यात्रा की योजनाएँ बनायें और इन तीर्थक्षेत्रों के प्रति जागरुकता लायें।

राजेन्द्र के. गोधा

राजेन्द्र के. गोधा
कार्याध्यक्ष/महामंत्री

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 10 अंक 4 नवम्बर 2019

श्री प्रभातचन्द्र जैन	अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा	कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी	उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)	उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल	उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला	उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला)	कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले	मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.)	मंत्री
श्री जयकुमार जैन	मंत्री

संपादकीय सलाहकार

पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा
डॉ. श्रीमती नीलम जैन
डॉ. अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल

श्री गणेशकुमार राणा
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा

संपादक-साज सज्जा
श्री मनीष बैद

संपादक
श्री उमानाथ दुबे

उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन
श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री लवकेश जैन
श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

गंधर्वपुरी (सोनकच्छ), मध्यप्रदेश:	6
अतिशय क्षेत्र श्री बंधाजी का इतिहास	8
The ruins of Purulia Digambar Jain Mandirs	12
लंदन स्थित ब्रिटिश संग्रहालय में आदिनाथ भगवान	14
भगवान महावीर के सिद्धान्तों की आज प्रासंगिकता	15
उनके लिए ये संसार ही जंगल था	16
सम्मेद शिखरजी की पर्वत वंदना पर बरतें सावधानी	17
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में .... जैन समाज	18
आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की समाधिस्थली :	19
सम्मेद शिखरजी पर्वत ... पर एम्बुलेंस	34
सम्मेदशिखर जी पर्वत पर टोंकों को श्वेत रंग से किया जा रहा सुसज्जित	35
तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल का शपथग्रहण समारोह संपन्न	36

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई.मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई. मेल अथवा मोबाईल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा मीटिंग आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/-
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

गंधर्वपुरी (सोनकच्छ), मध्यप्रदेश : छठी से १७ वीं शताब्दी की जैन प्रतिमाएँ तथा मंदिर

गंधर्वपुरी ग्राम इंदौर-भोपाल मार्ग पर सोनकच्छ नगर से उत्तर में करीब ९ किलोमीटर दूरी पर पक्की सड़क से जुड़ा हुआ छोटी-छोटी विन्ध्याचल की पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित है। इसके पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियाँ हैं, पूर्व की और सोमवती नदी तो पश्चिम में १.५ किलोमीटर की दूरी पर कालीसिंध नदी बहती है। यह ग्राम पहले एक बड़ा नगर हुआ करता था और चम्पावती, गंधावल, गंधर्वपुरी इत्यादि नामों से समय समय पर विख्यात रहा है। गंधर्वपुरी में पुरातत्व, इतिहास, ग्राम्य जीवन और मालवी संस्कृति की सुवास है।

क्षेत्र की पुरा सम्पदा और महत्व

गंधर्वपुरी एक प्राचीन ऐतिहासिक और कलापूर्ण दि. जैन तीर्थ है। यहाँ से अनेकों जैन प्रतिमाएं और अवशेष प्राप्त हुए है जो छठी सदी (गुप्तकाल) से लेकर १७ वीं सदी तक की है। यहाँ १९६६ में पुरातत्व विभाग की ओर से एक संग्रहालय का निर्माण किया गया, जिसमें सैकड़ों (३०० से भी अधिक) जैन, वैष्णव धर्म की मूर्तियाँ संग्रहीत हैं। वैसे भी गाँव में यत्र-तत्र मूर्तियाँ बिखरी पड़ी हुई है, प्रत्येक मकान के दासों में मूर्तियाँ लगी हैं। कई प्राचीन जैन मंदिरों के अवशेष तो जमीन में ही दबे पड़े है, जिन पर लोगों ने अपने घर बना लिए है। कुछ जगह मकान की नींव खोदने पर बड़े-बड़े पत्थर के बने कमरे एवं सीढ़ियाँ मिली हैं। जिसे जैन मंदिर का ही भाग माना जाता है। ज्ञात होता है कि गाँव में जो हरिजन मोहल्ला नाले के किनारे स्थित है वहाँ एक जैन मंदिर था, जिसके अवशेष वहाँ आज भी विद्यमान हैं। इस मंदिर के कुछ अवशेष गाँव के एक मकान में लगे हैं।

यहाँ एक १७ वीं सदी का छोटा सा जिनालय अवश्य मौजूद है जिसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है। यहाँ जो मूर्ति पार्श्वनाथ भगवान की है बहुत ही चैतन्य एवं चमत्कारी है। ग्राम में जगह जगह से प्राप्त अधिकांश प्रतिमाएं और अवशेष यहाँ के संग्रहालय में प्रदर्शित है तो कुछ यहाँ के छोटे से जिनालय में विराजमान है। यहाँ आज भी जिस जगह पर भी खुदाई होती है वहाँ से मूर्ति निकलती है। यहाँ की अनेक अच्छी एवं आकर्षक मूर्तियाँ भोपाल, देवास एवं दिल्ली संग्रहालयों में ले जाई गई है। स्थानीय निवासी बताते हैं कि यहाँ ग्राम से सैकड़ों मूर्तियाँ लापता हो गई हैं।

संग्रहालय में अन्य प्रतिमाओं के साथ जैन तीर्थंकर की दो विशाल प्रतिमाएं है, जो संग्रहालय में ही मुख्य द्वार के पास खुले तल में जमीन पर लेटा रखी है। इनमें एक मूर्ति श्री शांतिनाथ तीर्थंकर की है इसकी लम्बाई करीब १७ फीट एवं चौड़ाई करीब ४.५ फीट है। तथा दूसरी मूर्ति १२ फ़ीट ऊंची और ४ फ़ीट चौड़ी है जो कि नाले के पास वाले प्राचीन जैन मंदिर के खंडहरों से प्राप्त हुई है। इस गाँव के नीचे एक प्राचीन नगरी दबी हुई है। यहाँ हजारों मूर्तियाँ हैं। गंधर्वपुरी के संग्रहालय में पदमासन में जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की प्रस्तर प्रतिमा, खडगासन में शांतिनाथ जी, महावीर स्वामी जी का पद्मकलम से अलंकृत मनोहारी प्रभामण्डल, कुन्तल केशराशि और सीने पर श्रीवत्स अत्यंत प्रभावकारी है। अम्बिका देवी द्विभंग मुद्रा में,

सप्तफणी नाग के नीचे पार्श्वनाथ जी, जैन तीर्थंकर, कल्प वृक्ष के नीचे खड़ी जैन यक्षिणी का माधुर्य, बीस भुजाओं वाली चक्रेश्वरी देवी का द्विभंगी मुद्रा में लालित्य उस काल के शिल्प सौष्ठव की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

क्षेत्र का इतिहास

गंधर्वपुरी बहुत ही प्राचीन नगरी है। इसका नाम पहले चंपावती था। चंपावती यहाँ की राजकुमारी थी जिसके पुत्र गंधर्वसेन के नाम पर बाद में गंधर्वपुरी हो गया। आज भी इसका नाम गंधर्वपुरी है। राजा गंधर्वसेन जिन्हें गर्दभिल्ल और कहीं महेन्द्रादित्य भी पुकारा गया। शकों से पराजय के उपरांत भौगोलिक दृष्टि से संरक्षित गंधावल (गंधर्वपुरी) जो कि राजा गंधर्वसेन का ननिहाल भी था को राजा गंधर्वसेन ने संकट काल के लिए उपयुक्त जाना और उज्जैन से यहाँ पलायन किया और इसे अपनी तात्कालिक राजधानी बनाई। गंधर्वी विद्या का ज्ञाता होने के कारण ही उन्हें गर्दभिल्ल नाम से जाना गया। उनकी सभा में गायकों का प्राचुर्य था। गर्दभी विद्या में भी संगीत का तीसरा ग स्वर गर्दभ का माना गया है अनुमान है कि गंधर्वसेन अथवा गर्दभिल्ल ही उसके विशेषज्ञ थे। कालिदास ने एक गंधर्व आयुध का उल्लेख किया है जिससे जीव हिंसा किये बिना ही विजय सुनिश्चित की जा सकती थी। न चारिहिंसा विजयश्च हस्ते (रघुवंश सर्ग पांच)। गंधर्वसेन द्वारा भी गर्दभी ध्वनि से अहिंसा द्वारा शत्रु को परास्त करने का सूत्रपात करने की कथा मिलती है। गंधर्व सेन ५० वर्ष राजा के पद पर आसीन रहे। उनके पुत्र के राज्याभिषेक के बाद उन्होंने वन में जाकर दीक्षा ले ली ऐसा भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग नामक चतुर्थखण्ड में कलयुग राजवर्णन नामक उपाख्यान में उल्लेख मिलता है। इन सबसे सिद्ध होता है कि गंधर्वसेन के जीवन में जैन धर्म की शिक्षाओं ने गहरा प्रभाव जमाया था। और यही कारण है कि यहाँ जैन संस्कृति खूब फली फूली। कालांतर में यहाँ अनेकों जिन मंदिरों

का निर्माण हुआ और सहस्त्राधिक जैन प्रतिमाएं उनमे विराजमान की गयी।

गंधर्वसेन के बाद उनके पुत्र विक्रमादित्य सिंहासनरूढ़ हुए जिन्होंने गंधर्वपुरी से ही शक्ति संचित कर शक, हूण, कम्बोज, पवन और तुषारों को पराजित कर विशाल राज्य की स्थापना की तथा भगवान महावीर के निर्वाण के ४७० वर्ष पश्चात् ५७ ईसवी पूर्व नवीन विक्रम संवत का सूत्रपात किया। ईसवी की पहली शताब्दी के सातवाहन, आठवी शती के अभिलेखों, दसवीं शती के जैन साहित्य ने भी विक्रमादित्य और उनके पिता गंधर्वसेन की महत्ता को साक्ष्याकिंत किया है। जैन पट्टावलियां में महावीर निर्वाण के ४७० वर्ष होने पर विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय स्वरूप विक्रम संवत प्रारंभ करने का वर्णन मिलता है। कहा जाता है कि विक्रमादित्य ने भी काठ की तलवार से और भ्रभंग (भौहों के इशारे से) शत्रु पर विजय पायी थी। सिंहासन बत्तीसी में

'अहिंसक विजय' की चर्चा मिलती है।

गंधर्वपुरी की प्राचीन जैन प्रतिमाएं एवं अवशेषों को देखकर लगता हैं कि कई सदियों तक यह एक बहुत बड़ा नगर एवं व्यापारिक केन्द्र रहा होगा। यहाँ पर अनेक जैन मंदिर थे, साथ ही जैन परिवार की बाहुल्यता भी थी। ऐसे प्रमाण भी मिलते है कि यहाँ पर भगवान महावीर रुके थे। यह बात १३वीं शताब्दी में लिखी गई जैनधर्म की पुस्तक कालकाचार्य कथानक से भी प्राप्त होती है। कालिदास के प्रसिद्ध ग्रंथ मेघदूत में भी उज्जैन के पूर्व में स्थित गंधर्वपुरी का उल्लेख किया गया है।

गंधर्वपुरी का उल्लेख गंधावल के नाम से प्राचीन जैन स्मारक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी में मुद्रित सन् १९१४ में सरस्वती लायब्रेरी खण्डवा पुस्तक में किया गया है, जिसमें इसका प्राचीन नाम चम्पावती है एवं यहाँ से २ मील दूर पर्वत पर एवं ग्राम में भी जैन मंदिर के खंडहर का उल्लेख हैं। डॉ. कैलाशनाथ काटजू जो कि गृहमंत्री थे, तब वे यहाँ आये थे। उन्हें इस गाँव में प्राचीन मूर्तियाँ देखकर बेहद लगाव हो गया था, बाद में जब वे प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तब उन्होंने इसे सड़क से इंदौर-भोपाल मार्ग से जुड़वाया एवं पुरातत्त्व संग्रहालय की स्थापना करवाई। साथ ही इसका नाम गंधावल से गंधर्वपुरी करवाया।

वर्तमान स्थिति

यहाँ पर अनेक जैन मंदिर थे, साथ ही जैन परिवार की बाहुल्यता भी थी। वर्तमान में जैनियों के मात्र ४ परिवार ही रह गये हैं। यहाँ के जैनवासियों को गर्व है कि हम एक प्राचीन जैन धरोहर के बीच में उस गाँव में रह रहे हैं, किन्तु यहाँ जैन समाज विस्तृत नहीं होने के कारण एवं पूर्णरूप से आर्थिक कमी के कारण इस धरोहर के विकास में अड़चन आ रही है। यहाँ एक १७ वीं सदी का छोटा सा जिनालय अवश्य मौजूद है जिसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

हमारा कर्तव्य

इस तीर्थ को विकास की आवश्यकता है। इसकी रक्षा और विकास करना समस्त धर्मानुरागियों का पावन कर्तव्य है। यह तीर्थ जैन संस्कृति के अतीत की बहुमूल्य धरोहर है। आइये, आप और हम जो कुछ भी कर सकते है इस जैन पुरा-संपदा को बचाने के लिए, हम करे। सबसे पहले तो इस स्थल का अधिकाधिक भ्रमण करे, पुरातत्व विभाग से मिलकर या अनुमति लेकर पुरा महत्व की प्राचीन जैन प्रतिमाओं को जैन समाज को सौपने का दबाव बनाये ताकि आस पास या उसी स्थल पर उनकी विधिवत स्थापना करके प्राचीन प्रतिमाओं की सुरक्षा तथा सम्मान सुनिश्चित किया जा सके। ताकि क्षेत्र के समृद्ध जैन इतिहास और उसके गौरव को पुनः स्थापित किया जा सके।

- मनीष जैन, उदयपुर (राज.).

अतिशय क्षेत्र श्री बंधाजी का इतिहास

जिला मुख्यालय टीकमगढ़ से ४० किलोमीटर दूर श्री १००८ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र बंधा जी ऐसा पावन पुनीत तीर्थ क्षेत्र जहां हजारों वर्षों से धर्म की ज्योति निर्बाध रूप से प्रज्वलित होती आ रही है। प्राचीन जैन तीर्थ क्षेत्र बम्होरी बराना से ७ किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा की ओर सुरम्य पहाड़ियों के मध्य स्थित है। अतिशय क्षेत्र बंधा जी जैन पुरातत्व कला का उत्कृष्ट स्थान है।

इतिहासकारों का कथन है कि जब मूर्ति भंजक औरंगजेब अनेक स्थानों की मूर्तियों को नष्ट करता हुआ बंधा जी क्षेत्र पर पहुंचा तो उसने जैसे ही भगवान अजितनाथ की मूर्ति के ऊपर हथौड़े से प्रहार किया, उसी क्षण वह जंजीरों से बंध गया था। जब उसे अपने किए हुए पर पश्चाताप हुआ और उसने कहा हे भगवान मुझे आप इस बंधन से मुक्त कर दें मैं अब ऐसा नहीं करूंगा और आपकी शरण में रहूँगा। तभी से इस क्षेत्र का नाम बंधा जी पड़ा। बंधा जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मुरली जैन ने विजय जैन धुर्रा को बताया कि जब हम इतिहास के पन्ने देखते हैं तो अतिशय क्षेत्र बंधा जी का नाम सबसे ऊपर आता है।

श्री अजितनाथ भगवान की प्रतिमा १००० वर्ष से अधिक प्राचीन है। प्रतिमा के ऊपर जो स्वस्ति लिखी है वह चैत्र सुदी तेरस संवत ११९९ ईस्वी की अंकित है। जिसे आज हम पढ़ सकते हैं।

भगवान अजितनाथ के दायीं और बायीं ओर दो प्रतिमाएँ खड्गासन में विराजमान हैं।

एक प्रतिमा संभवनाथ भगवान एवं दूसरी प्रतिमा आदिनाथ भगवान की है, जो संवत १२०९ की है। श्री आदिनाथ दिगंबर अतिशय क्षेत्र बंधाजी में सन १८९० की प्रतिष्ठित भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान है। सन् १८९० में एक मूर्तिकार मूर्ति बेचने के उद्देश्य से बम्होरी बराना से निकल रहा था, अचानक उसकी बैलगाड़ी बम्होरी में अचल हो गई। बहुत प्रयत्न किये गये सभी विफल हुए, तभी बम्होरी निवासी सिंघई जी वहाँ से निकल रहे थे, उन्होंने यह आश्चर्य देखा तो उन्होंने भगवान से प्रार्थना की, कि मूर्तिकार की गाड़ी यदि बंधा जी की तरफ मुड़ जाए तो मैं प्रतिमा खरीदने के लिए तैयार हूँ।यह कहते ही बैलगाड़ी बंधाजी के लिए मुड़ गई। उन्होंने मूर्ति की न्योछावर राशि मूर्तिकार को दी। उनके द्वारा ही मंदिर का निर्माण कराया गया और मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई गई।

भगवान बाहुबली मंदिर: इस मंदिर में बाहुबली भगवान की ११ फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। बाहुबली भगवान की प्रतिष्ठा १९८३ में पंचकल्याणक के समय हुई थी। इसी हाल में त्रय वेदी बनी हुई है। ह्रीं में २४ तीर्थंकर भगवान विराजित हैं। बंधा जी में प्राचीन चंद्रप्रभ जिनालय में अति प्राचीन प्रतिमाएँ विराजमान थीं। वर्तमान में

उस मंदिर को नये रूप से बनवाया जा रहा है। क्षेत्र पर एक लाल पत्थर का मानस्तंभ बीच में स्थित है। जिसमें तीर्थंकरों की १२ प्रतिमाएं विराजमान है जिसको हम अर्द्ध चौबीसी कहते हैं।

वर्तमान की उपलब्धियाँ और विकास कार्य

०१ जनवरी २०१७ को चतुर्थकालीन चर्या का पालन करने वाली आर्यिका माँ विज्ञानमति माताजी ससंघ बंधा जी पधारी, उनके सान्निध्य में अजितनाथ भगवान का विधान हुआ। फिर १ जनवरी २०१८ को फिर से संयोग बना और आर्यिका विज्ञानमति माताजी का बंधा जी की पावन धरा पर आगमन हुआ।

आर्यिका विज्ञान मति माताजी की कठोर साधना आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज को बंधा तक खींच लाई..!!

सन २०१७ में आदिनाथ मंदिर में बहुत ही सुंदर प्राचीन शैली के भक्तांबर के ४८ काव्य श्लोक का अर्थ एवं चित्र सहित लग चुके हैं.!!

यह काव्य आदिनाथ मंदिर को शोभायमान कर रहे हैं।

इस प्रकार का मंदिर बुंदेलखंड में कहीं देखने को नहीं मिलता। बुंदेलखंड जैन तीर्थ क्षेत्रों से परिपूर्ण है यहां अनेक मंदिर मूर्तियां देखने को मिलती है।

बुंदेलखंड में मूलतः सात प्राचीन भौयरे स्थित है –

१. अतिशय क्षेत्र बंधा जी,

२. अतिशय क्षेत्र पपौराजी ,
३. सिद्धक्षेत्र आहार जी,
४. करगुवाँ जी झांसी ,
५. देवगढ़ ,
६. थूवोन जी एवं
७. सिरोन जी

अतिशय क्षेत्र बंधा जी विगत कई वर्षों से विकास की गाथा लिखता आ रहा है। सन १९८३ में अतिशय क्षेत्र बंधा जी में पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस प्रकार के आयोजन उस समय कम ही देखने को मिलते थे, उस समय इस कार्यक्रम को देखने समूचे बुंदेलखंड एवं आसपास के जिलों, नगरों एवं गाँवों से हजारों हजार लोग शामिल हुए थे। इसके बाद सन २००४ में बंधा जी में पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन हुआ था। बंधा जी कमेटी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पास विगत २५ वर्षों से जा रही है।

आचार्य श्री के आशीर्वाद से क्षेत्र विकास की राह पर चल पड़ा है। अतिशय क्षेत्र बंधा जी में सन २०१२ में आचार्य भगवन के आशीर्वाद से मुनिश्री अभय सागर जी, मुनि श्री प्रभात सागर जी एवं मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज का चातुर्मास हुआ। मुनि संघ के चातुर्मास से अतिशय क्षेत्र बंधा जी की ख्याति संपूर्ण भारतवर्ष में फैली। बंधा जी में ११ जनवरी २०१६ को परम पूज्य आर्यिका पूर्णमति माताजी ललितपुर से विहार करते हुए अतिशय क्षेत्र बंधा जी पहुंची थीं। माता जी के साथ ललितपुर से हजारों लोग बंधा जी बंधन यात्रा में शामिल हुए और माता जी के साथ हजारों लोगों ने पैदल ही ललितपुर से बंधा जी तक यात्रा की। माता जी के पावन सान्निध्य में महामस्तकाभिषेक का भव्य आयोजन बंधा जी की पावन धरा पर संपन्न हुआ। अतिशय क्षेत्र बंधा जी प्रबंध कार्यकारिणी कमेटी विगत २५ वर्षों से आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पास जा रही है।

बंधा जी में प्रत्येक वर्ष चैत सुदी पंचमी को भगवान अजितनाथ के निर्वाण महोत्सव के अवसर पर आचार्य श्री अपना आशीष प्रदान करते एवं अपने शिष्यों को बंधा जी भेजते आ रहे हैं। आचार्य भगवन की आगवानी के लिए मुनि श्री अभय सागर जी मुनि श्री प्रभातसागर जी एवं मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज अतिशय क्षेत्र बंधा जी में पहले से ही आ चुके थे। प्रदीप जैन बम्हौरी ने बताया कि आचार्य भगवान ३० जून को प्रात: कालीन बेला में सूर्य की किरणें निकलने के साथ ही आचार्य भगवान विद्यासागर जी महामुनि राज का बाबा अजितनाथ के दरबार में मंगल प्रवेश हुआ..!!

अतिशय क्षेत्र बंधा जी कमेटी एवं निकटवर्ती ४० गांव की समाज का २५ वर्षों से जो सपना संजोए थी वह आज ३० जून २०१८ को पूरा हुआ। ३० जून को आचार्य भगवन का ५० वां दीक्षा दिवस संयम स्वर्ण महोत्सव के रूप में मनाया गया। देश भर से हजारों श्रद्धालु इस कार्यक्रम में शामिल हुए और इसी संयम स्वर्ण महोत्सव के

अवसर पर १००८ श्री अजितनाथ भगवान भौयरे वाले बाबा का महामस्तकाभिषेक आचार्य भगवन के संसघ सानिध्य में संपन्न हुआ। जैसे ही आचार्य भगवन अजित नाथ भगवान के मंदिर में भौयरे में पहुंचे जैसे ही आचार्य श्री ने अजितनाथ भगवान को देखा उनके दर्शन किए आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि मुझे ऐसा लग रहा था जैसे भगवान मेरे कान पकड़ रहे हो मुझे रोक रहे हो मुझे बांधने का प्रयास कर रहे हो।

उसी समय उनके मन में एक परिकल्पना ने जन्म लिया कि इस धरती में ऐसा काम होना चाहिए जो सारे विश्व में कहीं नहीं हुआ हो और आचार्य भगवन की परिकल्पना सामने आई आचार्य ने कहा अतिशय क्षेत्र बंधा जी की पावन धरा पर विश्व का अद्वितीय प्रथम रजत मंदिर का निर्माण होगा और बंधा जी कमेटी ने आचार्य भगवन की इस बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया। आचार्य भगवान उस समय ४ दिन ही रुक पाए, इसके बाद वह बम्होरी जतारा होते हुए खजुराहो पहुँच गए। बंधा जी प्रबंध कार्यकारिणी कमेटी, ट्रस्ट कमेटी एवं निर्माण कमेटी, खजुराहो में आचार्य श्री के पास चातुर्मास में कई बार जाना हुआ, आचार्य भगवन का कमेटियों को समय-समय पर आशीर्वाद प्राप्त होता रहा।

नवंबर २०१८ में हुआ विश्व के प्रथम रजत मंदिर का शिलान्यास चातुर्मास समापन के साथ ही आचार्य भगवन का खजुराहो से विहार हुआ और १८ नवंबर २०१८ को प्रातः कालीन बेला में अतिशय क्षेत्र बंधा जी में दूसरी बार आचार्य भगवन का मंगल प्रवेश हुआ, साथ ही देशभर से हजारों श्रद्धालु बंधा जी में पहले से डेरा डाल चुके थे। अतिशय क्षेत्र बंधाजी में आचार्य भगवन ने जो दिया, न हमने कभी सोचा था ना सोच सकते थे, वह अविस्मरणीय है अकल्पनीय है। उन्होंने अतिशय क्षेत्र बंधा जी में रजत मंदिर निर्माण कराने की बात कही और १८ नवंबर २०१८ को दोपहर ४:०० बजे विश्व के प्रथम रजत मंदिर का शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। देश भर से आए हजारों श्रद्धालु रजत मंदिर शिलान्यास के साक्षी बने।

आचार्य भगवन विद्यासागर जी महामुनिराज ने खजुराहो में अपने प्रवचन के दौरान अतिशय क्षेत्र बंधा जी के बारे में जो कहा वैसा का वैसा लिखा जा रहा है। मुझे बुंदेलखंड की यात्रा के दौरान अनेक क्षेत्र के दर्शन हुए उनमें से एक क्षेत्र बंधा जी है वह अपने आप में अनूठा क्षेत्र है। वहाँ में ४ दिन ही रहा, लेकिन वहाँ काम चातुर्मास से कम नहीं हुआ।

वर्तमान में गुरु आशीर्वाद से वंदनीय आर्यिका दुर्लभमति माताजी ससंघ (०९ पिच्छिकाएँ) चातुर्मास कर रही हैं, जल्द ही गुरुआशीष से पूज्य निर्यापक मुनिश्री समयसागर जी महाराज के चरण भी पड़ेंगे और विशाल संघ का सान्निध्य प्राप्त होगा।

- विजय जैन धुर्रा

समाचार

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में ३४ वर्षों से संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी

सूचित किया जाता है कि अपभ्रंश- साहित्य अकादमी जो पिछले ३४ वर्षों से दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी में कार्यरत थी, उसके लिए नवीन भवन मालवीय नगर में निर्मित हो गया है। अब अपभ्रंश साहित्य अकादमी का कार्य निम्न पते पर होगा :-

अपभ्रंश साहित्य अकादमी एवं पुस्तकालय, ५-६, संस्थानगत क्षेत्र, गुरू नानक पथ, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-३०२०४७। फोन नं. ०४४४-२५२२४८०

यह भारत की एक मात्र अकादमी है, जो प्राकृत व अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार के लिए पिछले ३४ वर्षों से कार्य कर रही है। यहाँ पत्राचार के माध्यम से प्राकृत व अपभ्रंश का सर्टिफिकेट, डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जाता है। यह पाठ्यक्रम राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है।

इसके अतिरिक्त यहाँ जैन धर्म, दर्शन का पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है। प्राकृत-अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन हेतु पाठ्य पुस्तकों का निर्माण भी अकादमी के द्वारा किया जाता है। यह उल्लेखनीय है कि इस अकादमी द्वारा प्राकृत-अपभ्रंश का अध्यापन हिन्दी अथवा अंग्रेजी के माध्यम से कराया जाता है। यह अकादमी इस बात को विशेष महत्व देती है कि प्राकृत के ग्रन्थों का अनुवाद सरल रूप में किया जाना आवश्यक है। प्राकृत शब्दों की व्याकरण जो अब तक नहीं बताई जाती है, यह अकादमी उस दिशा में अग्रसर है। इस अकादमी द्वारा पाण्डु लिपि संरक्षण केन्द्र भी चलाया जाता है, जिसमें प्राचीन पाण्डु लिपियों का सुधारात्मक संरक्षण होता है और इस संरक्षण के लिए आधुनिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

मालवीय नगर, जयपुर में स्थित अकादमी में विद्वानों के ठहरने के लिए कमरों का निर्माण कराया गया है, जिससे कि विद्वान वहाँ आकर प्राकृत- अपभ्रंश का अध्ययन निःशुल्क कर सकें। भविष्य की योजनाओं में कार्यशाला, गोष्ठी के भी आयोजन यहाँ किये जायेंगे। इस अकादमी में एक कान्फ्रेन्स हॉल निर्मित है, जहाँ सम्मेलन, भाषण, गोष्ठियाँ आदि की जा सकती हैं। इसके साथ ही एक भोजनशाला की व्यवस्था भी है।

The ruins of Purulia Digambar Jain Mandirs

Purulia district, located in the east Bharatiya state of Pashchim Bengal, possesses a diverse amount of culture and heritage. Surrounded by Midnapur, Bankura and (Barddhman) Burdwan district, this place has undergone significant changes over the past few decades from being a part of a country known as Vajra Bhumi (diamond level).

One of the oldest districts of Bharat, Purulia has been deciphered as a significant part of the territory of 16 Mahajanapadas (set of 16 kingdoms), existing in 5th century AD. Despite going through many cultural influences through various periods of history, Purulia has always engaged lively throughout these changes. Such is shown in the temples of this place that represents the art and architecture of Jain Dharma.

Jain Dharma was one of the first religions to get prominence in Purulia. It is said that even today, the aboriginal people follow some of the rituals tracing back to the roots of Jain Dharma.

The religion rose to prominence due to Anantavarman Chola-Ganga-Deva, ruler of Eastern Ganga dynasty, in 1078 AD. Being ardent Jain followers, many temples were built in honour of Teerthanka Paraswanatha and Teerthankar Mahaveer in the 11th and 12th century. Later on, when Odishan influence captured the place, the interest turned towards Brahminism, worshipping Hindu gods and goddesses.

According to the historian, Chintu Dutta, these temples in the course of time met their fate and the images of Jain Tirthankaras (spiritual teacher) came to be worshipped as the images of Lord Vishnu and Lord Shiva. In a process of modifying the images and idols, deformation took place. Some of these temples have turned into rubbles and some of them are miraculously still intact.

The temples of Deulghata

The word Deulghata means "the land of temples" in Bengali. A place near Boram in Purulia District, it has the ruins of 15 temples with two standing erect. One of the richest heritage sites in the district, these temples were made under the rule of Pala (9th century) and Sena (11-12th century) empires of the late classical period.

Standing on the banks of river Kasai, 30 km away from the Purulia town, the temples have intrinsic terracotta in its walls as well as delicate, intricate designs all around it.

Deulghata-temple

The temple whose ruins are scattered all around was the tallest among all three. The temples depict chaityas (shrines) and miniature Rekha motifs, mostly found during the Pala – Sena empire. The Deulghata temples were so fascinating that a report published in 1909 in the Imperial Gazetteer of Bharat, a gazetteer for historical reference work, compared its art with those on the famous Buddhist temple in Bodhgaya. Despite being desolate and deep in the forest, it comes alive during Dol Jatra and Tusu festivals.

The temples of Pakbira

Another such village in Purulia, recounting the treasure trove of Jain Dharma is Pakbira. Located around 50 km away from the town, Pakbira came to be known when the antique Jain temples dating back to the 9th and 10th century were found. Today only three temples are found standing while the others have been neglected into debris. The interesting part about these temples of Pakbira is its architecture. The temples are made of greenish chlorite stones, found in abundance in that area. The temples are built-in Rekha deul style, which belongs to the Kalinga architectural style of Hindu architecture previously used in

Pakbira temple in Rekha deul architecture

the Utkal and the kingdom of Magadha (present Odisha). These temples also have the basic triratha (three chariots) plans with lotus fragments lying about. The 8ft high idol of Teerthankar Shitalnath, is now worshipped as Lord Bhairavnath, as a result of Hindu influence later in time.

The temples of Banda

About 35 kms away from the townhouses are another such towering temples called as Banda Deul (temple). Made between the 11th to 13th centuries, the temples are made of stone with a trirath projection. These temples are topped with a decorative spire in the shape of a lotus. The inner shrine contains an elevated platform for the deity but sadly the idol has been missing.

The sculptures of Banda have Jain connections. There are more than eight Tirthankaras, out of which three have Rishabhanatha (the bull symbol), the First Teerthankar, two of Teerthankar Mahavira (the lion), one Teerthankar Samhabhanatha (horse), one of Shri Padmaprabha (symbol of Lotus), and one Shri Chandraprabh (half-moon). There is a little doubt that these were originally the symbols enshrined in the temples or these might have been placed in the exteriors or to just showcase decorated. Many were later converted into Shaiva (devoted to the worship of Lord Shiva) or Shakta (devoted to the worship of the divine goddess) shrines or they have deserted altogether.

Other than these temples there are many such unexplored ruins of the Jain heritage in the outskirts of West Bengal. Jain Dharma traces back to the 9th century and the architectural style makes it distinct from other schools of architecture which came later. Unfortunately, these scriptures are highly being neglected and soon enough will change into a whole new abyss of debris.

Banda deul with the intricate architecture

-Sushmita Dutta

Tamilnadu : Farmers found the Parswanatha idol in a field

A seventh century stone idol of Parswanatha, the 23rd Jain Tirthankara, has been found in the fields close to the Bhimeswara temple at Dharmavaram village, near Addanki in Prakasam district.

E. Siva Nagi Reddy, CEO, The Cultural Centre of Vijayawada & Amaravati (CCVA), who inspected it on Saturday, said the upper portion of the antique idol surfaced when the farmers were busy with farm operations.

Following information, Mr. Reddy along with Jyothi Chandramouli, Addanki-based archaeologist and historian, Mr. Pasmal Jain, Santi Arts, Guntur and Mr. K. Srinadhareddy, trainee co-ordinator, CCVA-Heritage Club, rushed to the village on Saturday as part of the CCVA's awareness campaign 'Preserve Heritage for Posterity'.

The lower portion of the broken idol of Parswanatha, belonging to the Digambara sect, was already there on the premises of the temple.

Mr. Siva Nagi Reddy, after joining the two broken pieces of the idol together, said it was that of nude Parswanatha standing in 'kayotsarga' posture and canopied by a seven-hooded serpent.

Chalukyan-era sculpture

The sculpture dated back to the 7th century AD when the region was ruled by the founder of the Eastern (Vengi) Chalukya dynasty Kubja Vishnu Vardhana (619-641 AD).

The latter's wife was Ayyomadevi, a staunch Jain follower and had provided liberal grants to Jain monasteries like those of the Nedumbi Basadi in Jammidaddi area of Vijayawada. Dharmavaram might have also sprung up as an important Jaina centre. Mr. Reddy surmised that the Bhimeswara temple at Dharmavaram might have been a place of worship dedicated to Parswanatha Jain.

The local community hold that the original name of the village was Jinatharmavaram, later shortened as Dharmavaram. It is also important to note that the village also known for its early Telugu inscription.

Permanent postal cancellation depicting Hombuja Kshetra Jain Mutt released by Karnataka Postal Circle

The permanent postal cancellation depicting Hombuja Kshetra Jain Mutt, an ancient Jain Heritage Centre in Shivamogga, were released on the occasion 'Karnapex 2019' philately exhibition in Bengaluru on 13th Oct 2019.

लंदन स्थित ब्रिटिश संग्रहालय में आदिनाथ भगवान और महावीर भगवान की एक ही पत्थर पर खड़गासन प्रतिमा

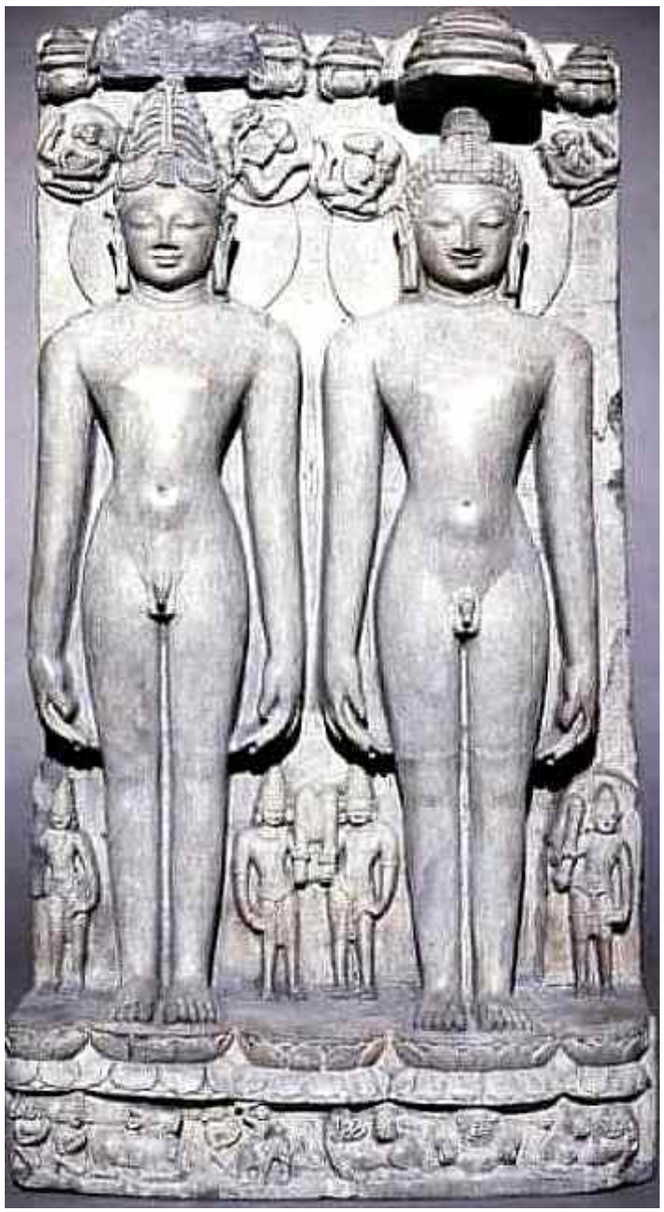

दुनियाभर में ये इकलौती प्रतिमा है जिसमें प्रथम तीर्थंकर और अंतिम तीर्थंकर एक साथ एक ही पत्थर पर हैं। यह प्रतिमा ११ वीं- १२ वीं शताब्दी की है। इसमें बाईं तरफ भगवान आदिनाथ और दाहिनी तरफ भगवान महावीर है।

ये प्रतिमा पहले उड़ीसा में थी। सन १८३० में जोन ब्रिज ने क्रिस्टी सेल में खरीदी थी। जोन ब्रिज के मरणोपरांत उसकी पत्नी ने १८७२ में इस प्रतिमा को ब्रिटिश संग्रहालाय को दान कर दिया था। सन् १८७२ से लंदन स्थित ब्रिटिश संग्रहालय में है।

भगवान महावीर के सिद्धान्तों की आज प्रासंगिकता

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर का जन्म आज से २६१८ वर्ष पूर्व विहार प्रान्त के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवम् माता त्रिशला के यहाँ हुआ था। भगवान महावीर एक युग पुरूष, युग दृष्टा, एक महामानव थे। वे जैन धर्म के २४ वे तीर्थंकर थे। यह भ्रांति है कि भगवान महावीर ने विवाह किया था। वास्तविकता यह है कि वे बाल ब्रह्मचारी थे।

क्षत्रिय राजकुमार होने के बावजूद भी उन्होंने कभी विश्व-विजय का सपना नहीं देखा। जिस समय भगवान महावीर का अवतरण हुआ, दुनिया में हिंसा एवम् अत्याचार का बोल बाला था। महावीर ने विषम परिस्थिति में सच्चा मार्ग दुनिया को दिखलाया। भगवान महावीर ने संन्यासी बनकर राजपाठ, वैभव का त्याग कर १२ वर्ष ६ माह मौन धारण कर तपस्या कर केवल ज्ञान की प्राप्ति की। आपने प्राणी मात्र के सुख के लिये जिओ और जीने दो का अमूल्य मंत्र दिया। महावीर ने कहा जो अपनी अन्तर आत्मा को जीतने में सफल हो जाता है वह सच्चा वीर कहलाता है। संसार मे जैन धर्म अहिंसा, शान्ति, प्रेम, और मैत्री का अमर सन्देश लेकर आया है। विश्व प्रेम ही भगवान महावीर का दिव्य सन्देश है भगवान महावीर के इसी सिद्धान्त को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन का मूल मंत्र माना था। उनकी पवित्र भावना ने सारे विश्व पर विजय प्राप्त की।

उनका कथन था पाप से घृणा करो न कि पापी से। उन्होंने विरोधी को कभी विरोध से नहीं वरन् सद्भावना एवं शान्ति से जीता। भगवान महावीर के हम सब पर अनन्त उपकार हैं। वह जिन थे, जिन का अर्थ होता है विजयी। उन्होंने किसी बाहरी व्यक्ति या देश की नही जीता, उन्होंने जीता अपने ही अन्दर छिपे शत्रुओं को स्वयं उन्हें जीता ही नही, अपितु उन्हे जीतने का सबको मार्ग भी बताया। अहिंसा, सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य ही वह मार्ग है, जिस पर चलने बाला अपने अन्तरंग शत्रुओं को जीत सकता है। भगवान महावीर ने कहा है आत्मा के तीन बड़े शत्रु है काम, क्रोध ओर लोभ। इनके चक्कर में पड़ा हुआ व्यक्ति जीवन में कभी अच्छे कार्य नहीं कर पाता। स्व कल्याण की लिये इन पर विजय प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। विश्व वंदनीय भगवान महावीर के जीवन एवम् दर्शन का गहराई से अध्ययन करते है तो हम पाते हैं। वे किसी एक जाति वर्ग या सम्प्रदाय के न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य धरोहर है। वह सबके थे और सब उनके थे वह स्वयं क्षत्रिय कुल मे उत्पन्न हुए थे, उनके मुख्य गणधर इन्द्रभूति गौतम ब्राहण थे तथा उनकी धर्म सभा (समवशरण) में सभी धर्मो और जातियों के लोग उन्हें सुनने के लिये आते थे उन्हें केवल जैनों या जैन मंदिरों तक सीमित रखना उनके उदान्त एवम् विराट व्यक्तित्व के प्रति अन्याय है वह जैन नहीं जिन थे। जो इन्द्रियजन्य वासनाओं और मनोजन्य कषायों को जीत लेते हैं, वे कहलाते है जिन, किसी का भी कल्याण जैन बनकर नहीं, जिन बनकर ही हो सकता है।

भगवान महावीर ने कहा है त्याग व तपस्या से जीवन महान बनता है। श्रावकों को अपने आचरण में अहिंसा तथा जीवन में अपरिग्रह रखना चाहिये। वर्तमान में विश्व में बढ़ रहे अलगावबाद, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद हिंसा की प्रवृत्ति पर अकुंश लगाने भगवान महावीर के सिद्धान्त प्रासंगिक हैं महावीर के सिद्धान्त प्राणीमात्र के लिये हितकारी हैं। वर्तमान में राजनेताओं की कथनी और करनी में अन्तर है जबकि राजनेताओं की कथनी और करनी मे समानता और एकरूपता होना चाहिये। विश्व में आज अहिंसा और प्रेम के स्थान पर हिंसा और नफरत का वातावरण बनाया जा रहा है। सत्ता और धन ही सब कुछ ही गया है। देश हित और आदर्श की बातें करने बाले ही यह सब कुछ कर रहे हैं। हमारे भारत देश में ही हजारों वर्ष की तपस्या के बाद जिन मूल्यों की स्थापना हुई है, उन्हें नष्ट किया जा रहा है। त्याग, सेवा, परोपकार के मार्ग पर चलने के बजाय हम अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने में लिप्त हो गये हैं। वर्तमान में नई पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने के स्थान पर उन्हें गुमराह किया जा रहा है, नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवम् संस्कारों से विमुख होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रही है। समाज का नेतृत्व करने वाले ही यदि पतन के मार्ग पर चलने लगे तो नई पीढ़ी को कैसा आदर्श मिलेगा। दुनिया में सुख शान्ति की स्थापना करने के लिये हमे हर कीमत पर भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलना होगा। तभी भारत की प्राचीन परम्पराओं ओर विरासत की रक्षा होगी। भारत ने हिंसा में कभी भी विश्वास नहीं किया। हमारा विश्वास भगवान महावीर के सिद्धान्तों पर चलकर दूसरों की जान लेकर जीने में नहीं वरन् अपनी जान की बाजी लगाकर दूसरों की रक्षा करने में है। वर्तमान परिस्थिति में भगवान महावीर द्वारा बताये गये मार्ग का अनुशरण करने में ही हम सबका कल्याण है।

नोट- लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष है।

- विजय कुमार जैन,

उनके लिए ये संसार ही जंगल था

दिनांक १८ अक्टूबर २०१९ को दिगंबर श्रमण संस्कृति का एक और नक्षत्र अस्त हो गया। मुनि चिन्मय सागर जी समाधिस्थ हो गए। इस कलिकाल में भी त्याग और संयम की उत्कृष्ट साधना के फल स्वरूप अंतिम समय में शांत परिणामों से देह का विसर्जन हो जाना, किसी आश्चर्य से कम नहीं लगता। मेरे लिए मुनि चिन्मय सागर जी दूरदर्शन का ही विषय रहे।

कभी साक्षात् दर्शनों का सौभाग्य न मिल सका। किन्तु जैसा देखा,जाना और सुना, वह साक्षात् से कम भी नहीं है। लोग उन्हें जंगल वाले बाबा के नाम से पुकारते थे। पता नहीं उन्हें यह संबोधन पसंद था कि नहीं, लेकिन भक्तों ने जैसा देखा सुना और अनुभव किया उसके अनुसार भक्ति भाव से संबोधन भी बना लिया। कोई चाहे कुछ भी कहे पर बीहड़ जंगलों में साधना और तपस्या के दिन आज नहीं रहे। देखा जाए तो अब जंगल भी कहां बचे हैं? पहले एक शहर से दूसरे शहर जाओ तो बीच में जंगल दिखते थे। अब ५०० किलोमीटर भी चले जाओ तो ऐसा लगता है जैसे एक शहर खत्म भी नहीं हुआ और दूसरा शुरू हो गया।

अब न जंगल हैं और न जंगल वाले बाबा। जंगल तो आज भी हैं लेकिन कंक्रीट के जंगल हैं, पेड़, झाड़,पत्थर, शिला और झरनों, नदियों वाले जंगल नहीं हैं। मुनि चिन्मय सागर अपने आप में अनोखे साधक थे। उन्हें न शहरों में रहना पसंद था और न संघ में। मुझे कभी उनके प्रवचनों में भी कोई खास शैली दिखाई नहीं दी। एक मात्र तप ही उनके प्रचंड प्रभाव का कारण था। जंगलों में उनकी आहार चर्या के दृश्य, जंगल में ध्यान तपस्या के दृश्य, पेड़ों पर टंगी हुई जाप मालाएं - जो कुछ भी पारस चैनल दिखाता था, वो सब मैं प्राय: सभी की तरह देखती थी। आरंभ में लोग उन्हें पारस चैनल वाले बाबा ही कहते थे। लेकिन अपनी धुन में मस्त और दुनिया की आलोचना की परवाह किए बिना मुनि श्री चिन्मय सागर ने वो कार्य किया जिसका आज जैन समाज को ऋण मानना ही पड़ेगा और वह कार्य है जन जन को जैन बनाना। उनके विहार बीहड़ जंगलों, पिछड़े गांवों और आदिवासियों के मध्य बहुत होते थे। मुनि चिन्मय सागर जी के दिगंबर स्वरूप,तप और ध्यान के प्रचंड प्रभाव ने उन सभी को इनका भक्त बना दिया। आपने उन्हें णमोकर मंत्र सिखाया, उन्हें मद्य मांस के त्याग संकल्प दिला कर शुद्ध शाकाहारी बनाकर उन्हें जिन धर्म का अनुयाई बना दिया। इस प्रकार के उनके भक्तों की संख्या भी लाखों में है। जैन जाति नहीं धर्म है - जैन धर्म के इस मूल आधारभूत सिद्धांत के आधार पर उन्होंने एक नई क्रांति को आगाज़ किया, जो बहुत सारे प्रभाव उत्पन्न करने वाले संत आज भी नहीं कर पा रहे हैं।

मुझे लगता है चिन्मय सागर जी सिर्फ जंगल में नहीं रहते थे बल्कि इस जगत को ही जंगल समझते थे। हम सभी इस संसार के राग द्वेष मोह क्रोध मान माया लोभ के बीहड़ जंगल में जंगली बन कर रह रहे हैं। दरअसल वे हम जंगलियों को धर्म सिखाने वाले बाबा थे इसलिए जंगल वाले बाबा थे। आज जंगल वीरान हो गया है,हम जंगली कुछ सीख पाए या नहीं लेकिन हमारे जंगल वाले बाबा अपने ब्रह्म स्वरूप में लीन हो गए और उस बीहड़ में हमें मार्ग बता कर अकेला छोड़ गए कि समय रहते अकल आ जाए तो इसी प्रकार सामायिक और समाधि का मार्ग अपना कर इस जंगल से बचने का प्रयास ज़रूर कर लेना जैसा मैंने किया है।

दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

- रुचि अनेकांत जैन ,नई दिल्ली

सम्मेद शिखरजी की पर्वत वंदना पर बरतें सावधानी

जैनों के शाश्वत तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी में देशभर से श्रावक-श्राविकाएँ व अन्य श्रद्धालु २७ किमी की वंदना करने आते हैं। नौ किलोमीटर की चढ़ाई, फिर २५ टोंकों के लिए नौ कि.मी. की वंदना तथा पार्श्वनाथ टोंक से नौ कि.मी. के उतार के लियए श्रावक-श्राविकाएँ रात्रि में २ बजे पर्वत पर चढ़ना आरंभ करते हैं । कुछ कमजोर, वृद्ध लोगों को छोड़कर सभी पैदल वंदना करते हैं। इस वंदना के लिए कहा भी गया है कि एक बार वन्दे जो कोई ताहि नरक-तिर्यंच गति न होई।

दिगम्बर हो या श्वेताम्बर सभी पूरे उत्साह से यहां वंदना करने आते हैं। परंतु आज आपको एक सावधानी के साथ चेतावनी भी देना चाहेंगे। गर्मियों में पहाड़ पर तीव्र तपन होने के कारण वंदना नहीं हो पाती, इसलिए अक्टूबर से फरवरी तक यहां श्रावक-श्राविकाओं की भीड़ बढ़ जाती है।

आपके लिए यह जानना तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब पता चले कि पिछले दस दिनों में यहां वंदना करते पांच तीर्थयात्रियों की मृत्यु हो चुकी है। यह सुनकर घबराने की जरूरत नहीं है। गत वर्ष यहां ०६ दिसम्बर २०१८ को एक, फिर २६ दिसम्बर २०१८ को चेन्नई के श्री विजय कुमार परिचंद की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गई थी। ठीक दो दिन बाद २८ दिसम्बर २०१८ को बैंगलोर के श्री देव कुमार जैन की वंदना करते हुए मृत्यु हो गई। पर सबसे ज्यादा दर्दनाक दिन रहा शनिवार ०५ जनवरी २०१९ जब तीन तीर्थयात्रियों की वंदना करते हृदय गति रुकने से मत्य हुई। मैसूर की ४६ श्रीमती वर्षीय सुनीता जैन की वंदना शुरू करते ही, नागपुर के ६० वर्षीय श्री सिंघई जैन की आदिनाथ टोंक के पास हृदय गति रुक जाने के कारण और नागपुर के २६ वर्षीय युवा श्री आदित्य पोहरे की पहली टोंक गौतम गणधर पर हालत बिगड़ने पर हुई। उन्हें डोली से नीचे भी लाया गया, पर चिकित्सा के दौरान दम तोड़ दिया।

अब यहां पर दो बातों पर ध्यान दें, पहला कि जिन के साथ यह हादसा हुआ वे सभी दक्षिणी भारत के हैं, उन्हें उत्तर भारत की कड़कती ठण्ड का अनुभव नहीं होता। रात्रि में जब दो बजे वे वंदना के लिए चलते हैं तो ३-४ किमी बाद ठण्डी हवाएँ रक्त वाहनियों व धमनियों पर असर डालती हैं। दक्षिण में तापमान इतना नीचे नहीं गिरता और ठण्ड का अनुभव न होने के कारण वे ऐसे हादसे के शिकार हो जाते हैं।

दूसरी बात यह कि जब आपको ऐसा लगे कि आपके सीने में तेज दर्द हो रहा है और वह दर्द आपके जबडों तक पहुंच जाता है, तो हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ शैलेष शर्मा ने इसका एक प्राथमिक इलाज बताया है कि ऐसी स्थिति में अगले चंद सेकंड बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं, तब जोर-जोर से सांस लें और एक जोर की खांसी, इतनी तेज की मुंह से थूक निकले ऐसा करते रहें जब तक प्राथमिक मदद न आ जाए उसको दोहराएँ, जोर-२ से सांस लेने से फेफड़ों में ऑक्सीजन का प्रवाह बढ़ जाता है और खांसने की वजह से दिल सिकुड़ता है जिससे रक्त प्रवाह नियमित हो जाता है।

सम्मेद शिखरजी में चिकित्सा सुविधाएँ भी सुधारने की आवश्यकता है, इस दिशा में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी प्रयास कर रही है। आप जब भी सर्दियों के समय वंदना करें तो ठण्ड से बचने के लिए पूरे गरम कपड़े पहनकर रात्रि दो की अपेक्षा प्रत्यूष बेला में वंदना की शुरूआत करें।

- शरद जैन

पारसनाथ स्टेशन पर जल्द लगेगी लिफ्ट

रेलवे पैसेंजर कमेटी ने पारसनाथ स्टेशन का भी निरीक्षण किया। यहां राजधानी ट्रेने का ठहराव समय बढ़ाने, रांची कुर्ला एक्स. का ठहराव, गोम वर्द्धमान पैसेंजर ट्रेन का पारसनाथ तक विस्तार, पेयजल की समुचित व्यवस्था, स्टेशन पर लिफ्ट और रैम्प की मांग की गई। अधिकारियों ने बताया कि यहां लिफ्ट की स्वीकृति हो चुकी है। चार माह के अंदर लिफ्ट का कार्य शुरू हो जाएगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में .... जैन समाज

हमारी सांस्कृतिक धरोहर, विचारों और चिन्तन की लंबी समृद्ध गौरवशाली परम्परा का परिणाम है। हमारे पारम्परिक मूल्य एवं मान्यताओं की अपनी महत्ता है जो अन्यों से हमें श्रेष्ठ बनाती है। आज महावीर नहीं हैं पर उनकी अहिंसा आज भी है। जैन धर्म पुरुषार्थ प्रधान धर्म है, पुरुषार्थ ही हमारे भाग्य को जागृत करता है, महावीर स्वामी भाग्य से नहीं अपने पुरुषार्थ से भगवान बने। हमारा पुरुषार्थ ही हमें जो चाहे वह बना सकता है, महानता व्यक्ति के कर्म से आती है, व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान होता है।

ऋषभदेव (भगवान आदिनाथ) जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर हैं। ऋषभदेव के पुत्र राजा भरत का उल्लेख स्कन्द पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण, विष्णु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। मथुरा से प्राप्त अभिलेखों में भगवान ऋषभदेव के अतिरिक्त अन्य तीर्थंकरों और अन्तिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर का उल्लेख मिलता है इससे भी पहले वेदों में सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में भगवान ऋषभदेव का उल्लेख है जिसकी रचना अधिकांश विद्वानों के अनुसार लगभग ३००० वर्ष ईसा पूर्व मानी जाती है जिससे लगभग पांच हजार वर्ष पहले ऋषभदेव को तीर्थंकर के रूप में स्वीकार किया गया। १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सिन्धु घाटी में की गई खुदाई से वैदिक सभ्यता से पहले वहां एक प्राचीन भारतीय सभ्यता भी मौजूद थी खुदाई से प्राप्त अवशेष सिन्धु घाटी की सभ्यता से जैन धर्म के प्राप्त हुए हैं।

हमारे जीवन में संत, महात्मा परिव्राजक ऐसे ही क्रान्ति चेता हैं जो परम्पराओं को नष्ट किए बिना न तो उनका खण्डन करते हैं और न ही उन्मूलन, उनका परिस्थितिजन्य नवीनीकरण कर देते हैं यही हमारी परम्पराओं की विशेषताएं हैं। हजारों वर्ष से उसका परिमार्जन होता आ रहा है एक नवोन्मेष होता है और समाज को नई दिशा मिलती है।

जैन धर्म का विपुल साहित्य और ग्रन्थ उपलब्ध है। आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में आज के दौर में भौतिकता और भोगवृत्ति बढ़ने से आत्मिक शान्ति की आशा दूर होती जा रही है। मुगल शासनकाल में बहुत ही विपरीत परिस्थितियों में हमारे आस्थाओं पर कुठाराघात हुए उनके अवशेषों को बचाते हुए सन्त, महात्माओं ने आत्म साधना द्वारा जिस सत्य का संदेश जैन धर्मावलंबियों को दिया उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी पहले कभी थी जैन धर्म किसी व्यक्ति, वर्ग, सम्प्रदाय या जातीय का धर्म नहीं है बल्कि यह सभी प्रकार की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सभी मानव समाज को समान रूप से कल्याण का मार्ग दिखलाता है तीर्थंकरों और आचार्यों ने बिना किसी भेद-भाव के सबको सदा समान रूप से आत्म तत्व का अनुभव प्राप्त करने का उपदेश दिया है।

पुरातन काल से अहिंसक जैन समाज कन्या भ्रूण हत्या के अभिशाप से संतप्त आज जिसके दुष्परिणाम विवाह योग्य कन्याओं के अभाव में ३५ से ४० वर्ष तक के युवा वैवाहिक संबंधों के लिए भटक रहे हैं आचार्यश्री गुरुवर विद्यासागर जी महाराज एवं अन्य जैन सन्तों ने समाज को अनेक बार इस ओर संकेत भी किया है। जैन धर्मावलंबी संस्कारित जैन समाज में पारम्परिक शिथिलता देखने को मिलती है युवा वर्ग में अन्तरजातीय वैवाहिक संबंध और सजातीय युवतियों के ऐसे समाज में वैवाहिक संबंध हो रहे हैं जहाँ मांसाहार उनकी दैनंदिनी में शामिल हैं समाज के लिए यह कितना निन्दनीय है ? समाज की बेटी समाज में होगी तो परिवार संगठित होगा, परिवार संगठित होगा तो समाज संगठित होगा। समग्र जैन समाज को इस पर मंथन करना होगा।

संयुक्त परिवार में बिखराव के कारण आज समाज एकल परिवार की ओर बढ़ रहा जहाँ उपेक्षित होते बुजुर्गों की पीड़ा बखूबी देखी जा सकती है, संयुक्त परिवारों का सांझा चूल्हा अब अतीत की बात हो गई है। गांव की हरियाली, मिट्टी का सोंधापन हम भूल चुके हैं विरासत में मिली पुरातन परम्पराओं में शिथिलता आ रही है।

समाज के युवा वर्ग का आई.आई.टी., आई.आई.एम. और प्रशासनिक सेवाओं की तरफ रुझान, मल्टीनेशनल कम्पनियों और सरकारी नौकरियों में अधिक से अधिक भौतिक सुविधाओं के लिए ले जाता है हमारा पूरा समाज ही मनी-माइंडेड होता जा रहा है युवा भी इसी समाज के अंग हैं सारा दोष युवाओं का नहीं है और हमारे युवा पारम्परिक मूल्यों का निर्वहन कर वह समाज के बदलाव के सारथी बने। यह भी सच है कि युवा तकनीक से लेकर प्रत्येक क्षेत्र में बदलाव के सपने देखता है लेकिन सपना देखने भर से काम नहीं चलेगा उन्हें व्यवस्था में भागीदारी निभानी होगी तभी वह अपने को मूर्त रूप दे सकेंगे प्रत्येक क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं।

वैश्वीकरण के इस दौर में ग्लोबलाईजेशन के बाद बहुत तेजी से बदलाव आए हैं। समाज के युवाओं में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। आज युवा सुविधाभोगी हो गया है, पारम्परिक व्यवसाय एवं संस्कारित पारिवारिक सुखद क्षणों को छोड़, युवाओं का ताना-बाना न्यूनतम संसाधनों से अधिकतम सुविधाएं अर्जित करने की सोच से इतना प्रभावित है कि संस्कारों का मूल्य पैसों से तय होने लगा है अब युवा बेहतर भविष्य के लिए अपने देश तक ही सीमित नहीं वरन् विश्व देशों में अपनी दृढ़ संकल्प इच्छा शक्ति से समाज के युवाओं का बड़े औद्योगिक और मल्टीनेशनल कम्पनियों में कमाई के अच्छे स्त्रोत तो बने हैं पर इनके दूरगामी परिणाम समाज के प्रति मानवीय संवेदनाएं, सरोकारों, पारम्परिक मूल्यों में गिरावट आई है जिस कारण चुनौतियों से भागने की, युवाओं के नैतिक संस्कार विघटन की ओर जा रहे हैं। युवा, समाज की रीढ़ हैं इसकी परिणति अच्छी होगी यह समाज के स्तम्भ बनें और हम सभी का संकल्पित प्रयास हो कि प्रौद्योगिक युग

के इस दौर में समाज का अन्तिम पंक्ति में खड़ा कोई युवा वंचित न हो। आज की व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा में युवा पीढ़ी के सामने भविष्य की गंभीर चुनौतियां हैं और जो उसमें पिछड़ गया उसके दुष्परिणाम ऐसे युवा मानसिक हताशा में जी रहे हैं। युवाओं का चिन्तन सकारात्मक एवं सृजनात्मक हो वह अपनी ऊर्जा को इतना विकसित करें जो समाज के लिए उदाहरण बन सके यही युवा समाज की गौरव गाथा लिखेंगे, देश में उच्च प्रशासनिक सेवाओं में विभूतियों की कमी नहीं है जिससे समाज को संबल मिलता है।

देश के मेट्रो शहर और अन्य औद्योगिक शहरों में शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न युवाओं को सर्व सुविधायुक्त जैन छात्रावास समाज के श्रेष्ठीजनों के प्रयास से स्थापित हैं ऐसी ही पहल अन्य शहरों में समाज करें यह विचारणीय है। शहरों में जैन-भवन का निर्माण जहां आवासीय कमरा, भोजनशाला, धार्मिक और समाज के मांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न हो सके समाज की महती आवश्यकता है।

वर्तमान में देश की आबादी का एक प्रतिशत से भी कम जैन समाज को घटती जनसंख्या ने अल्पसंख्यक पारसी समुदाय के समकक्ष ला दिया है और आगामी वर्षों में घटती जनसंख्या से जैन समाज और बदतर स्थिति में पहुंच जावेगी। समाज पुरातन श्रमण संस्कृति, आध्यात्मिक विरासत की परम्परा को कब तक कायम रख पावेगी यह देखना होगा? समाज के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखने में हमने अभी नहीं सोचा तो भविष्य में हम बहुत ही सीमित दायरे में सिमट जावेंगे।

पुरातन सांस्कृतिक धरोहर अन्यों से हमें श्रेष्ठ बनाती है और उस गरिमा को बनाए रखते हुए हम भले ही अनेक आम्नाओं और पंथ में बटे देश के किसी अंचल में हो, एकजुट समाज के समग्र विकास और सौहार्द में अग्रसर हो। आए...! हम सभी भगवान महावीर के अनुयायी हैं हमारे बीच क्षमताओं की कमी नहीं है कमी है सिर्फ हमारे विचारों और एकजुटता की हम एक हैं और जैन समाज के एक ही मंच से संगठित समाज का आव्हान करेंगे।

आज महावीर का जैन धर्म चर्चा का नहीं, धर्म का विषय है, महावीर ने अपने जीवन को ऐसे जिया कि स्वयं को जीतकर महावीर हो गए। यदि हमें भी कुछ बनना है तो जीने का अंदाज बदलना होगा और वह भी कल नहीं आज बदलना होगा, महावीर को जानने की कम, जीने की ज्यादा आवश्यकता है, महावीर को जीने वाला ही महावीर का सच्चा अनुयायी होता है, महावीर को जीने को अर्थ है 'महावीर की मानना' और वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत युगदृष्टा भगवान महावीर के संदेश युगों-युगों के बाद आज भी प्रासंगिक हैं। जैसा भी है हमारा जैन समाज हमारी समर्पितता समग्र जैन समाज के प्रति हो।

हम जैन हैं ..... और जैनत्व हमारा नारा है।

- सुबोध मलैया, सागर

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की समाधिस्थली : श्री सम्मेदशिखर जी

-डॉ. सुमत जैन, जयपुर

समाधिस्थली से तात्पर्य सामान्यत: उस स्थान से ग्रहण किया जाता है, जहाँ किसी मुनि अथवा पुण्यात्मा के मृत शरीर को गाढ़कर अथवा जलाकर स्मारक बनाये जाते हैं। इसी अर्थ का प्रतिपादन प्राय: सभी शब्दकोश करते हैं। किन्तु, आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज की समाधिस्थली पर यह अर्थ लागू नहीं होता है। यहाँ उनकी समाधिस्थली का अर्थ है- स्थल विशेष की ऐसी व्यवस्था जिससे उनकी याद स्थायी बनी रहे तथा आगन्तुक उनके पुण्यकारी कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करते रहें।

परमपूज्य आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज का समाधिस्थल सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर पर स्थित है। इसे शाश्वत तीर्थ भी कहा जाता है। इस तीर्थक्षेत्र के जैसा अन्य कोई क्षेत्र संसार में नहीं है, क्योंकि इस तीर्थराज की मान्यता अनादिकाल से रही है। यह तीर्थक्षेत्र चौबीस तीर्थंकर में से बीस तीर्थंकरों की निर्वाणस्थली तथा असंख्यात मुनिराजों की मोक्षस्थली भी है। इसलिए इस क्षेत्र का कण-कण पूजनीय व वंदनीय है। ऐसे क्षेत्र में स्थित आचार्यश्री की समाधिस्थली का भी विशेष महत्त्व है।

तीर्थराज सम्मेदशिखर पर विगत ५०० वर्षों में आचार्य विमलसागर जी पहले आचार्य थे, जिनका समाधिमरण आचार्यपद पर हुआ था। इस सम्बन्ध में विद्वान् मनीषी कमल जी बाकलीवाल ने अपने

लेख 'श्रमणशिखर का जीवन-पथ' में लिखा है कि वह समय आ गया था जिसका इन्तजार साधना के महासपूत चमत्कारी बाबा मन ही मन कर रहे थे, लेकिन श्रावक जगत् इस समय का इन्तजार जीवनपर्यन्त नहीं चाहता था। किन्तु, २९ दिसम्बर, १९९४ का दिन श्रमण संस्कृति में आचार्य प्रवर विमलसागर जी महाराज के समाधि दिवस के नाम से

अंकित हुआ। यह घटना श्रावक जगत् को आश्चर्य में डाल गयी और साधना के महासपूत आचार्यश्री चमत्कारपूर्ण सम्यक् समाधि में लीन हो जन-जन को आश्चर्य में डालते हुए सारी दुनिया मेरी, मैं किसी का नहीं; कहते हुए चित्त चुराकर चल बसे। प्राणीमात्र का मोह त्यागकर स्वध्यान में लीन हो गये।

पूज्य आचार्यश्री के समाधिमरण के पश्चात् ३० चौबीसी का निर्माण कार्य चल रहा था। ३० चौबीसी का निर्माण कार्य परिपूर्ण होने के बाद उसके मध्य में रिक्त स्थान पर आचार्यश्री के भक्तों ने आचार्यश्री की स्मृतियाँ सदा जीवित रखने हेतु समाधिस्थली का शिलान्यास कर समाधिस्थल निर्मित किया, जो वर्तमान में भी आचार्यश्री की जीवंतता का बोध कराती है।

यह समाधिस्थल तीन कक्षों में निर्मित है। सबसे अन्दर के भाग में आचार्यश्री की भव्य प्रतिमा विराजमान है, दूसरे कक्ष में आचार्यश्री के चरण स्थापित हैं एवं तीसरे कक्ष (दूसरे के बराबर में) में यात्रियों के प्रेरणार्थ भजन-कीर्तन इत्यादि हेतु स्थान है, जहाँ बैठकर यात्रीगण आचार्यश्री के प्रति गुणगान करते हैं एवं अपने-अपने तरीके से उनका यशोगान व अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित कर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

प्रथम कक्ष में स्थित आचार्यश्री की प्रतिमा उनके व्यक्तित्व का परिचय कराती है। जिससे अवगत होता है कि आज से १०० वर्ष पूर्व भारत देश के उत्तर प्रान्त में एक महान् सपूत 'नेमिचन्द्र' ने जन्म लेकर कोसमां ग्राम (एटा, उ.प्र.) को पवित्र बनाया था। वह सपूत आगे चल कर महान् विद्वान् , वैद्य, प्रतिष्ठाचार्य हुआ फिर दिगम्बरत्व को धारण कर वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

परम पूज्य आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज ने जन-जन को धर्म का मर्म सिखाया। धर्म के रहस्य- अहिंसा, प्रेम, वात्सल्य व करुणा से भव्य प्राणियों का उत्थान किया। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण सभी क्षेत्रों (तीर्थक्षेत्रों) की वन्दना करके नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में भ्रमण करते हुए जैन और जैनेतर को सप्त व्यसन का त्याग कराकर सन्मार्ग में लगाया। पूज्य आचार्यश्री के जीवन में सहजता, सरलता उनके स्वभाव में ही शोभायमान थी। एक बार जिसने दर्शन कर लिया, वह चुम्बक की तरह खिंचा चला आता था व पुन: पुन: दर्शन की अभिलाषा रखता था। उन्होंने स्वोपकार ही नहीं किया, बल्कि परोपकार की भावना से भी दूर नहीं रहे। एक श्रेष्ठ गुरु के समस्त लक्षण उनके रोम-रोम में विद्यमान थे। वे प्राज्ञ थे अर्थात् जिस प्रकार मोमबत्ती स्वयं जलती है व दूसरों को प्रकाशमान करती है, उसी प्रकार आचार्यश्री अपने शिष्यों को ज्ञान, ध्यान, तप साधना के द्वारा प्रकाशमान करते थे तथा स्वयं अपने शिष्यों को अपने से अधिक दृढ़ बनाने में दृढ़चित्त रहते थे।

आपके सान्निध्य को पाकर अनाथ सनाथता का अनुभव करता है। कितने ही सामान्यजन श्रीमन्त बन गये तथा धर्मात्मा यतिपने को प्राप्त हो गये। उन्होंने अपने जीवन को खुशहाल बना लिया। दिगम्बर गुरु योग के शिखर होते हैं। योगी परम पूज्य गुरुदेव के साधना काल में ध्यान व स्वाध्याय की प्रमुखता रही। वे दु:खी, कृपा-पात्रों को महामंत्र का जाप करने का आदेश देते, जिससे उनके पुण्य की अभिवृद्धि हो दु:ख दूर हो जाते थे। वे किसी को भी दु:खी नहीं देख सकते थे। उनके मन में करुणा का स्रोत प्रवाहित था। उन्हें ऐसा लगता था कि प्रत्येक प्राणी सुखी रहें, कोई भी दु:खी या पीड़ित न हो तथा सभी धर्म में लगे रहें। वे वैयावृत्ति में भी अग्रसर रहते थे। अपने से छोटे या अन्य का विकल्प न करते हुए भी वैयावृत्ति करते थे। इस प्रकार यह प्रतिमा हमें इन सभी तथ्यों का स्मरण कराती है और हमें धर्माभिमुख होने के लिए जागृत करती है।

द्वितीय कक्ष में स्थित चरणचिह्न से हमें आचार्यश्री के गुणों का अवबोध होता है। आचार्यश्री गुणों की खान थे। आप सन्मार्ग दिवाकर, तीर्थोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति, ज्योतिपुंज, करुणा के सागर, जन-जन के उद्धारक थे। उनके चरण-चिह्न हमें उनकी चारित्रिक-विशेषताओं का भी बोध कराते हैं, जिनका सामान्यत: अवलोकन हम इन शब्दों में कर सकते हैं-

१. किन्हीं भी दिगम्बर साधु के आने पर उन्हें लेने जाना व उनके जाने पर छोड़ने जाना। इसे वे अरहंतलिंग का सम्मान मानते थे।
२. सामने वाले की बात को सम्मानपूर्वक सुनना।
३. किसी के आने पर मुस्करा कर बोलना या मुस्करा देना।
४. सिद्धान्त व आगमोक्त चर्या का पालन।
५. गुरु के प्रति विनय रखना, कदापि उनकी अवहेलना न करना।
६. आप में वैद्य, वास्तुविज्ञ, निमित्तज्ञानी, अध्यापक आदि अनेक गुण

समाहित थे।

तृतीय कक्ष में सभी भक्त जन बैठकर आचार्यश्री के गुणों का स्तवन, पाठ और भजन कर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं तथा आरती करके अपने आपको भाग्यशाली मानते हैं।

आपकी जीवनचर्या ने आबालवृद्ध सभी पर अमिट छाप छोड़ी है, जिसके कारण कोई आपको विस्मृत कर ही नहीं सकता। आज भी आपके पावन स्मरण मात्र से भव्यात्माओं के विघ्न दूर हो रहे हैं, कार्य पूरे हो रहे हैं।

आपके अतिशयपूर्ण कार्य हुए, जिनसे सारे देश के भव्यजन लाभान्वित हैं। किन्तु आज आपका अभाव हम सभी के अन्तर्मन को झकझोर देता है। आपके समाधिस्थ हो जाने से सारा जैन समाज अनाथ सा हो गया; यह क्षतिपूर्ति होना अत्यधिक कठिन है। क्योंकि आप में वे सभी गुण थे जो एक भव्यात्मा में ही पाये जाते हैं। आपकी प्रतिमा से व्यक्ति इतना प्रभावित होता है कि कुछ समय के लिए बाहरी दुनिया को ही भूल जाता है। ऐसे गुणों के आकर गुरुराज के जीवन- चरित्र को जीवंत रखने हेतु सम्मेदशिखर जी में निर्मित समाधिस्थली का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। समाधिस्थली के चारों तरफ प्रकृति द्वारा विकीर्ण मनोरम दृश्य समाधिस्थलों की भव्यता को और भी मनमोहक बना रहे हैं। इससे यह दृश्य मानव-मन को अपने-आप समाधिस्थ करने में सक्षम प्रतीत होता है।

जब धर्ममार्ग अविरुद्ध हुआ पथ भूल भटकते थे प्राणी।
सतगुरु के उपदेश बिना, नहिं जान सके थे जिनवाणी।।
धर दीक्षा मुनि धर्म बताया स्वयं बने निश्चय ध्यानी।
प्रणमूं श्रीविमल सिन्धुजी को, जिनकी महिमा सबने जानी।।

अंतत: कहना चाहता हूँ कि समाधिस्थ आचार्य विमलसागर जी की विमल वाणी मोती बन जग को दिशा देगी। तीर्थराज पर निर्मित समाधिस्थली हमें हमेशा याद दिलाती रहेगी। इस सम्बन्ध में देश के प्रसिद्ध गीतकार-संगीतकार रवीन्द्र जैन की यह विनयांजलि उल्लेखनीय है-

यह मत सोचो अब तो गुरुवर हमको नहीं मिलेंगे।

प्रवचन

बच्चों का हित चाहने वाले उन्हें मोबाइल से दूर रखें : आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज

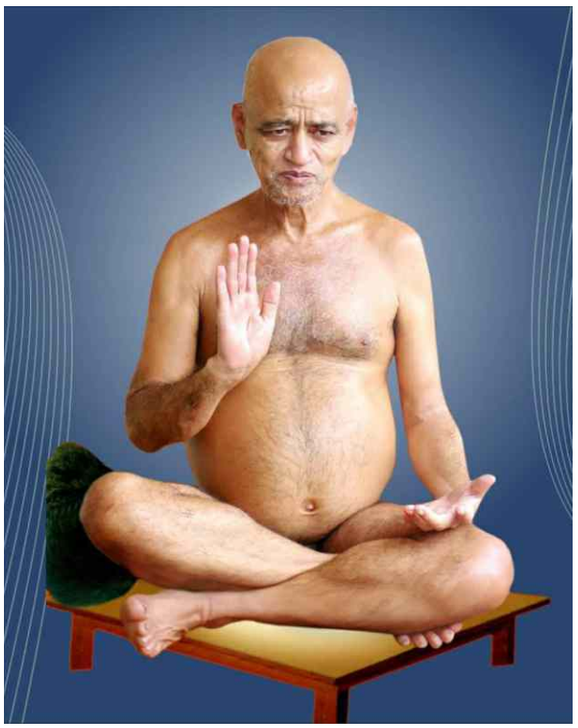

हम बहुत प्रकार के कार्य करते रहते हैं। शुभ कार्य भी करते रहते हैं और अशुभ कार्य भी करते रहते हैं। कई बार शुभ भाव रखने पर भी गलत कार्य हो जाता है। मोबाइल का दुरुपयोग भी ऐसा ही है। यह सुविधा की दृष्टि से तो ठीक है, पर इससे शरीर में रोग पैदा होने के साथ अन्य तरह की विकृतियों का भी खतरा बना हुआ है इसलिए कम से कम बच्चों को तो इससे बिल्कुल दूर रखें। जो माता-पिता अपने बच्चों का हित चाहते हैं, वे ऐसा अवश्य करें।

उक्ताशय के उद्गार संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मोबाइल से निकलने वाले घातक विकिरण देह को अत्यधिक क्षति पहुँचाते हैं। इससे कई तरह की बीमारियां होने के शोध सामने आए हैं। विदेशों में लोग सावधान होने लगे हैं और भारत में मोबाइल का नशा सिर चढ़कर बोल रहा है, यह स्थिति नुकसानदायक है।

भयानक रोगों के बावजूद जागरुक न होना दुखदायी .....

आचार्य श्री ने कहा कि मैं इसीलिए कहता हूँ कि शुभ भाव भी अशुभ फल देता है। भले ही मोबाइल उपयोगी हो पर उसके परिणामों के प्रति भी सचेत होना चाहिए। जब मोबाइल से भयानक रोग होने की बात सामने आ चुकी है फिर भी लोगों की बुद्धि में इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरुकता न आना दुखदायी है।

प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें और बनाएं .....

उन्होंने कहा कि बच्चों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाएँ और स्वयं भी वैसे बनें। हर समय मोबाइल में रमे रहने की आदत ठीक नहीं है, इससे आँखों को नुकसान पहुँचता है, त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हृदय रोग का खतरा बना रहता है इसलिए मोबाइल का उपयोग बड़ी सावधानी से करना ही उचित है। अति सर्वत्र वजर्‍येत की सीख मानें और समय रहते मोबाइल से बचाव कर लें। यह सुविधा पूरी पीढ़ी के लिए सबसे बड़े खतरे के रूप में सामने है।।

अहंकार कम करने के उपाय : मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज

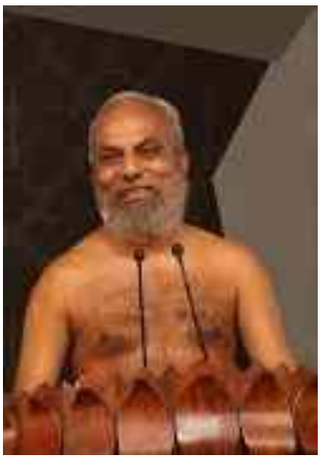

विनम्रता को अपने जीवन का आदर्श बनाएं :

जो व्यक्ति समृद्धि के शिखर पर बैठने के बाद भी विनम्रता की मूर्ति बने बैठे हैं उनसे हम कुछ सीखें और ये बात समझें कि महानता का आधार अहंकार नहीं विनम्रता है। पेड़ उतना ही ऊंचा उठता है जितनी कि उसकी जड़ें गहरी होती है। ऊंचाई सदैव गहराई सापेक्ष होती है, ये हमारे चिंतन में होना चाहिए। विनम्रता को जीवन का आदर्श बनाकर चलने वाला व्यक्ति ही अपने अहंकार को जीत सकता है।

संयोगों की नश्वरता का विचार करें :

मनुष्य को अपने रूप, वैभव, बुद्धि, धन, प्रभाव और प्रतिष्ठा पर अहंकार होता है। परन्तु ये सब चीजें स्थाई नहीं हैं। आज कर्म का उदय है तो सब कुछ ठीक है, पर कर्म कभी भी करवट बदल सकता है। हमें जीवन और संयोगों की नश्वरता पर बार-बार विचार करना चाहिए। अहंकार करने लायक दुनिया में कुछ नहीं है। ये संयोग नश्वर हैं, टिकाऊ नहीं हैं। जो संयोग आज है कल रहे ना रहे। हवा के वेग से कागज का एक टुकड़ा उड़ा और पर्वत के शिखर तक जा पहुंचा। पर्वत ने उस कागज से पूछा कि यहां कैसे? कागज ने अहंकार से अकड़ते हुए कहा- अपने दम से और कैसे। तभी हवा का एक दूसरा झोंका आया और उस कागज को उड़ाकर वापस नीचे ले आया। अगले पल वह कागज नाली में पड़ा हुआ सड़ रहा था। बस यही है मनुष्य की परिणति। इसलिए मनुष्य को अहंकार त्याग देना चाहिए। जिस दिन पाप का प्रकोप आएगा, नाली में सड़ना पड़ेगा।

अपने से ऊपर वालों को देखें :

जब हमको अहंकार सताने लगे तो हमें देखना चाहिए कि मुझसे भी बड़े-बड़े लोग हैं। औरों के आगे तो मैं कुछ नहीं हूं। अज्ञानी प्राणी तुच्छ उपलब्धियों को ही सर्वस्व मानकर अभिमान करता है जबकि ज्ञानी महान उपलब्धियों को भी तुच्छ समझता है। तो हमें ये देखना चाहिए कि औरों की अपेक्षा मैं क्या हूं। हम कितने भी बड़े बन जाएं सबसे बड़े नहीं हो सकते। ये विचार करने से जीवन में अहंकार कम होगा।

महाव्रत धारण कर सम्यक्त्व की रक्षा होती है - पूज्य मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज

पूज्य मुनि श्री प्रणम्यसागर जी ने बताया कि प्रारम्भिक अवस्था में सम्यक्त्व बार बार आता जाता रहता है, उसे स्थायी बनाने के लिए प्रयत्न करने पड़ते है तथा व्रत /संयम पूजन /भक्ति आदि के माध्यम से उसे सहेजना पड़ता है बाद में धीरे धीरे एकदेश व्रत और अंत में महाव्रत धारण कर सम्यक्त्व की रक्षा होती है तथा मोक्ष मार्ग पर चलने का शुभारंभ होता है। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति सम्यक्त्व को ही मोक्ष मार्ग मान कर बैठ जाए तो उसका सम्यक्त्व भी चला जाता है, जैसे कोई मार्ग की जानकारी ले ले और मार्ग की तरफ अपनी मोटर साइकिल का मुख कर दे, उसे स्टार्ट भी कर दे परन्तु गाड़ी स्टैण्ड से नहीं उतारे तो फिर व्यर्थ ही पेट्रोल जलता रहेगा परन्तु मार्ग पर आगे नहीं बढ़ पायेगा, आयु पूरी हो जायेगी, पेट्रोल समाप्त हो जायेगा, परन्तु धुआँ फेंकने के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं होगा, अत: सावधानी की आवश्यकता है, न भ्रम में रहें और न भ्रम फैलायें।

मुनिश्री ने करुणा से भरकर श्रावकों को सावधान रहने की सीख दी वर्तमान में ज्ञानधारा का प्रचार चल रहा है तथा शुद्ध आत्म द्रव्य के गुण गाये जा रहे हैं जबकि आचार्य रचित ग्रंथों में ऐसी कोई ज्ञानधारा का वर्णन नहीं है तथा शुद्ध आत्म द्रव्य का भी शक्ति की अपेक्षा से वर्णन है। पर्याय की अशुद्धता होने से पर्यायी का द्रव्य भी नियम से अशुद्ध ही कहलायेगा। जैसे दुग्ध में घी बनने की शक्ति तो है, परन्तु शक्ति को अभिव्यक्त भी करना होगा दुग्ध को घी रूप द्रव्य रूप से शुद्ध मान कर पड़ा रहने देंगे तो वह फट जायेगा। जिस प्रकार दुग्ध से घी की प्राप्ति दुग्ध को तपा कर, जमा कर, मथ कर, नवनीत रूप मे परिणत करने बाद घृत रूप में होती है। साथ ही कोई विपरीत एकांत मार्गी के सम्पर्क में आ गए तो वह फिटकरी डलवा कर आत्म रूपी दुग्ध को फाड़ने की सीख देगा।

मुनि श्री आगे बताते है कि जिस प्रकार दुग्ध से घी की प्राप्ति दुग्ध को तपा कर (नियम संयम लेकर) जमा कर (महाव्रतों को लेकर) मथ कर (व्यवहार - निश्चय की मथनी लेकर) नवनीत रूप (संसार से पृथक केवली भगवद) अंत में घृत (सिद्ध अवस्था) रूप में होती है।

मुनि श्री आगे बताते है कि- शुद्ध निश्चय नय से सभी आत्माएँ शुद्ध है, परन्तु आत्मा कि शुद्धता प्रकट करनी पड़ती है। जिसकी एक प्रक्रिया है पहले व्यव्हार सम्यक् दर्शन प्राप्त होने पर ही निश्चय की प्राप्ति हो सकती है बगैर हाई स्कूल पास करे स्नातक की किताब पड़ने से स्नातक नहीं बन सकते। प्रक्रिया और क्रम से ही मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ा जाता है। बड़े बड़े आचार्य भी प्रभु भक्ति में मग्न हैं इसलिए भक्त बने रहिये। भगवान बनना नहीं पड़ता ...बन जाते हैं।

आलोचना, निंदा करने से सगे संबंधी भी शत्रु बन जाते हैं: मुनिश्री प्रभातसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में विराजमान मुनिश्री प्रभातसागर महाराज ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि एक बात हमेशा ध्यान रखो जो वाद-विवाद करते हैं उन्हें परिवार के लोग भी प्यार नहीं करते और जो धन्यवाद को अपनाता है उससे पड़ोसी भी प्रेम करने लगते हैं। दूसरों की प्रशंसा करने में कंजूसी न करें। परिवार को स्वर्ग बनाने के लिए आपको यह नहीं देखना कि सामने वाला कितना गलत है बल्कि यह देखना है कि वह कितना सही है। आलोचना या निंदा करने से संबंधी भी शत्रु बन जाते हैं और प्रशंसा करने से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। प्रशंसा जैसी छोटी बात से आपके रिश्ते में बहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है इसलिए आप किसी में कोई विशेष गुण है उसकी प्रशंसा कीजिए। आलोचना के चक्र को चलाकर आप न तो घर को स्वर्ग बना सकते हो और न ही परिवार के किसी सदस्य को सुधार सकते हो।

मुनिश्री ने कहा कि दूसरों की आलोचना करके आप उन्हें सुधार सकते हैं तो आप गलत समझ रहे हैं। आलोचना के औजार से कोई सुधरता नहीं है बल्कि ऐसा भी हो सकता है कि वह और बिगड़ता चला जाए। साधारणतया हमेशा दूसरों की गलतियों की तरफ ही इशारा करते हैं, दूसरों के दोष ही बताते हैं। हम दूसरों को बदनसीबी की तरफ ले जाते हैं और अपने लिए सबसे खराब काम करते हैं। ऐसा कभी न सोचें कि आलोचना से ही सुधार होता है। आलोचना से सुधार होता भी है तो वह आगे नरक ही तैयार करता है।

मुनिश्री ने कहा कि आप जानते हैं कि हिटलर को बचपन से ही हमेशा आलोचनाएं प्राप्त हुई थीं। वही हिटलर बड़ा होकर विश्व को सिर्फ विध्वंस ही दे पाया। बचपन से उसे जो मिला था वही वह विश्व को दे पाया। जिस बहू को सास से सिर्फ गालियां ही मिलती हैं

प्रवचन देते मुनिश्री प्रभातसागर महाराज

वह सास बनने के बाद अपनी बहू को भी गालियां ही देती है। जिस छात्र को उसके शिक्षक ने छड़ी मारकर पढ़ाया है वह यदि शिक्षक बन जाए तो वह भी अपने छात्रों के साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा उसके साथ किया गया था। जो बच्चा अपने सख्त पिता की कड़ी देखरेख में बड़ा होता है वह पिता बनकर अपने बच्चों को भी वही सजा देता है इसलिए अब आपको आलोचना का यह चक्र रोकना होगा। प्रवचन के पूर्व आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के चित्र का अनावरण करने का परम सौभाग्य इंदौर, भोपाल, बासौदा, विदिशा आदि स्थानों से आए श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। ज्ञानदीप का प्रज्जवलन पाठशाला की बहनों ने किया। प्रवचन सभा का संचालन धर्मेन्द्र नारधा एवं सहयोग संकलन श्री अशोक शाकाहार ने किया।

भगवान महावीर एवं मर्यादा पुरुषोत्तम राम के त्याग, तपश्चर्या का प्रतीक है दीपावली पर्व : मुनिश्री अभयसागर

खुरई। प्राचीन जैन मंदिर में आयोजित धर्मसभा को ज्येष्ठ मुनिश्री अभयसागर महाराज ने समस्त नगरवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि बुराईयों पर अच्छाईयों की विजय एवं त्याग, तपश्चर्या, भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव का प्रतीक है दीपावली पर्व। दीपावली पर्व का प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय का अपना-अपना महत्व है और सभी मिल-जुलकर इसे मनाते हैं।

मुनिश्री ने कहा कि दीपावली पर्व पर प्रत्येक घर में कुछ हो या न हो दीप जरूर जलाए जाते हैं। एक छोटा सा दीपक घोर अंधकार को दूर करने की क्षमता रखता है। हमें इस महान पर्व पर अंतरंग के दीप को जलाकर मिथ्यात्व को दूर कर निर्वाण की प्राप्ति करना है, जीवन मरण से मुक्त होना है।

मुनिश्री प्रभातसागर महाराज ने कहा कि वास्तव में इस बार सही मायने में वर्षाकालीन चातुर्मास का समापन हुआ। चातुर्मास के प्रारंभ से अंत तक दीपावली के दिन भी बूंदाबांदी होती रही। व्यापारी दीपावली पर्व को नए वर्ष के रूप में मनाते हैं। वर्तमान समय में भले ही कम्प्यूटर युग ने वहीखातों का चलन समाप्त कर दिया हो परंतु आज भी व्यापारी इसे बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। कुछ गलत अवधारणा से इस पवित्र एवं गरिमामयी त्यौहार में विसंगतियां देखी जाती हैं इसे दूर करना चाहिए। राष्ट्रहित एवं पर्यावरण की रक्षा हेतु आतिशबाजी, जुआ का प्रचलन पर भी रोक लगना जरूरी है।

मुनिश्री निरीहसागर महाराज ने मंदिर की मर्यादाओं एवं सच्चे देव, शास्त्र, गुरू के श्रद्धान को बनाए रखने के लिए आधुनिक परिधान वस्त्र आदि पहनने का निषेध करते हुए भगवान महावीर के 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत को अमल करने का संदेश दिया।

सिद्धक्षेत्र में शुरू हुआ भावना योग शिविर

सिद्धक्षेत्र में शुरू हुआ भावना योग शिविर बड़वानी दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा में संत शिरोमणी ०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य गुणायतन प्रणेता शंका समाधान व भावना योग प्रवर्तक प.पू. प्रमाण सागरजी व विराट सागरजी महाराज के सानिध्य में मंगलवार सुबह ५.३० बजे से भावना योग शिविर प्रारंभ हुआ। यह शिविर मुख्य रुप से पहली बार ५ से २५ वर्ष के युवाओं के लिए आयोजित किया गया है। शिविर में करीब ३०० युवक-युवतियां शामिल हो रहे हैं। शिविर के माध्यम से देश- विदेश के कई लोग अपनी अच्छी दिनचर्या, स्वास्थ्य, व्यापार को लेकर लाभ ले रहे हैं। इस शिविर में आज दोपहर में विशेष व्यक्तित्व विकास के लिए विशेष वक्ता श्री प्रशांत जैन ने जीवन की उपलब्धियों को और जीवन में किस प्रकार आगे बढ़े और कैसे चुनौतियों का सामना करें। वहीं शिविर के दौरान शिविरार्थियों के सवालों और जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। भावना योग से व्यक्तित्व कर आत्म विश्वास स्वास्थ्य और अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। हताशा और अवसाद में में भी कई बीमारियों के मरीज भी भावना योग से स्वस्थ हुए हैं। भावना योग से कई लोगों की दिनचर्या ही बदल गई है और व्यवस्थित हो गई है।

अष्टाह्निका पर्व : सिद्ध क्षेत्र बावनगजा में शुरू हुआ ८४ मंडलीय सिद्ध चक्र महामंडल विधान,
सिद्ध चक्र मंडल पूजा का शुरू होना मणि कंचन योग है - प्रमाण सागर जी महाराज

सिद्धक्षेत्र बावनगजा में सोमवार से ८४ मंडलीय सिद्ध चक्र महामंडल विधान (अष्टाह्निका पर्व की शुरुआत हुई है। ८ दिन चलने वाले इस विधान को लगभग १३४० भक्त मंडल के पास बैठकर व पंडाल में नीचे बैठकर विधान कर रहे हैं, जो आठ दिन तक करेंगे। विधान मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज और मुनिश्री विराट सागर जी महाराज के सान्निध्य में चल रहा है।

बावनगजा ट्रस्ट के सदस्यों ने बताया सुबह ६.३० बजे विधान करने वाले सभी भक्तों ने भगवान का अभिषेक, शांतिधारा की और संकल्पित हुए। मुनि संघ को बैंडबाजों के साथ उनके कक्ष से पंडाल तक लेकर आए और मुनिश्री की उपस्थिति में ध्वजारोहण और पंडाल का उद्घाटन किया गया। इसके बाद सभी ८४ मंडलों पर पूजन करने वाले भगवान की प्रतिमाएँ अपने मस्तक पर रखकर पंडाल में लेकर पहुंचे और वेदी में विराजमान कर विधान शुरू किया। अब प्रतिदिन शांतिधारा, अभिषेक के साथ विधान होगा।

मुनिश्री प्रमाण सागर महाराज ने बताया आज की घड़ी बड़ी पावन घड़ी है। अष्टाह्निका पर्व का प्रथम दिन और सिद्ध चक्र मंडल पूजा का शुरू होना मणि कंचन योग है। ये हमारे पिछले पापों से मुक्त होने का योग है। अपने-आप को पवित्र करने का योग है। ये कोई साधारण विधान नहीं है। ये जीवन की सर्वश्रेष्ठ आराधना है। एक बार सिद्ध चक्र विधान करने से किए गए पापों का प्रायश्चित होता है। इस विधान को मन लगाकर करें।

- विजय जैन धुर्रा

९ वाँ अखिल भारतीय जैन डॉक्टर सम्मेलन तिजारा में सम्पन्न
सभी डॉक्टरों ने एक मत से स्वीकारा जैनधर्म और शाकाहार हैं हर रोग का इलाज
चिकित्सक का व्यवहार भी मरीज का इलाज है- आचार्यश्री ज्ञानसागरजी

देहरा, तिजारा। सराकोद्धारक, राष्ट्रसंत, तपोनिधि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में प्रशम मूर्ति आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज (छाणी) के समाधि हीरक महोत्सव २०१९.२० के उपलक्ष्य में श्री चन्द्रप्रभ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्रए देहरा तिजारा (अलवर) राजस्थान में देश भर के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ डॉक्टरों का ९ वाँ अखिल भारतीय जैन सम्मेलन १९.२० अक्टूबर को संपन्न हुआ । देश के अलग.अलग प्रान्तों के आए वरिष्ठ अनुभवी व युवा चिकित्सकों ने अपने पीपीटी प्रस्तुति के माध्यम से जहाँ अपने अनुभव साझा किएए वहीं युवा चिकित्सकों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। आचार्यश्री ज्ञान सागर जी ने शरीर विज्ञान के साथ अध्यात्म विज्ञान को अपनाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। प्रख्यात चिकित्सक व जैन दर्शन के अध्येता व्रती श्रावक डॉ. डी. सी. जैन (दिल्ली) के नेतृत्व में लगभग २०० से अधिक चिकित्सकों ने सहभागिता कर अपने प्रस्तुतिकरण के अंत में स्वीकारा कि जैनधर्म और शाकाहार से हर रोग का उपचार संभव है।

जीवन में रत्नकरण्ड श्रावकाचार का पालन करें चिकित्सक- आचार्य श्री ज्ञानसागर जी

देशभर के डॉक्टरों को एक मंच पर लाकर जैन धर्म के संस्कारों को पहुँचाने की प्रेरणा प्रदान कर अपनी दृढ़ चर्या में रत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने उपस्थित चिकित्सकों को अपने मार्गदर्शन में कहा कि चिकित्सक को मरीज के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए। निस्वार्थ भाव से अपना फर्ज़ पूरा करें। आपकी कीर्ति में निरंतर वृद्धि होगी। शाकाहारी जीवन शैली, तनाव मुक्त जीवन शैली हैए यदि हमारे जीवन में रत्नकरण्ड श्रावकाचार आ जाएए तो कैंसर जैसी बीमारियाँ नहीं होंगी। आचार्य श्री ने कहा कि डॉक्टर का व्यवहार ही उसका इलाज है। हमारे पूर्वाचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थसूत्र में परस्परोपग्रहो जीवानाम् का सूत्र दिया है, उसका पालन करें। डॉक्टर स्वयं भी व्यसन मुक्त हों देव दर्शन, तीर्थ यात्रा, सरल-सहज व्यवहार के माध्यम से अपने आपको ऊर्जा युक्त रखें। फ़ीस के लोभ में निर्धन मरीज की उपेक्षा न करें। शाकाहार अपनाने हेतु मरीज को प्रोत्साहित करें। एक चिकित्सक के प्रोत्साहन से लाखों व्यक्ति शाकाहारी बन सकते है।

वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. डी. सी. जैन (दिल्ली) ने कहा कि जैन जीवन शैली में अधिकांश बीमारियों का इलाज हो जाता है इसलिए जैन जीवन शैली की वैज्ञानिकता व संयम, त्याग को प्रचारित किया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि डॉ. डी. सी. जैन दिल्ली सरकार में उच्चतम पद पर रहे हैं व स्वयं व्रती श्रावक है जो अनेक विदेश यात्राओं में भी जैन जीवन शैली व श्रावक के नियमों का कड़ाई से पालन करते है।

व्रती दम्पत्ति चिकित्सक डॉ. सुहास-मोनिका शहा (मुम्बई) जो दो प्रतिमा धारी हैं, तीस वर्षों से मुम्बई महानगर में प्रैक्टिस कर लाखों लोगों को शाकाहारी बना चुके है, वर्तमान में मर्म चिकित्सा के बहुत बड़े जानकार है. ने अपने प्रस्तुतिकरण में बताया कि आहार में शहजनी के पेड़ (शेंगा) का उपयोग २०० तरह की बीमारियों को दूर करने में सहायक है। कोलेस्ट्रॉल कम करने में सहायक है। कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए गाय का शुद्ध घी दो चम्मच रोज़ लेना चाहिये। उल्लेखनीय है कि चिकित्सक दम्पत्ति आचार्य श्री के अनन्य भक्त है व जैन जीवन शैली के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं।

डॉ. दीपिका सोगानी का कहना था कि प्रत्येक रोग में रोगी को पहले भावनात्मक रूप से मजबूत होना आवश्यक है। पत्रकार मयंक जैन ने जानलेवा मांस पर एक फ़िल्म मीट किल्स (मीट किल्स) दिखाई, जो सभी के लिए बहुत उपयोगी है।

मनोचिकित्सक डॉ. अनामिका पापड़ीवाल ने कहा कि सभी शारीरिक व्याधियों का मूल मानसिकता से है. डॉ. विनोद शाह का कहना था कि वर्ष में २० दिन उपवास रखने से भी अनेक बीमारियों का खात्मा होता है। हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. सुनील जैन ने कहा कि जैन सिद्धांत वैज्ञानिक कसौटी पर खरे उतरते हैं।

वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ. अभिनंदन जैन (दिल्ली) ने कहा कि शाकाहार को प्रोत्साहन देने हेतु प्रसिद्ध शेफ संजीव कपूर को हरी सब्जियों का उपयोग दिखाने को कहा उन्होंने स्वीकार किया और 'फूड एंड फूड' में वे हरी सब्ज़ियों की रेसिपी दिखा रहे हैं। शाकाहार मोतियाबिंद को रोकता है। हरी सब्जी उपयोग से पहले दो घण्टे पानी में डूबोए. उस पानी में मैग्नेशियम परमैगनेट की एक बूंद डाल दें, जिससे सब्जियों का ऊपरी ज़हर निकल जाएगा । डॉ. मनीष जैन ने कहा की अमरूद के पत्तों से कुल्ला करने, हल्दी लोंग का तेल दांतों पर लगाने से पायरिया जैसा रोग दूर होता है।

डॉ. सिद्धार्थ जैन (ग्रेस्ट्रोलॉजिस्ट) ने कहा कि बीमारियों का कारण आधुनिक जीवन शैली है, कुछ समय के लिए जैन बनकर देखिए कई बीमारियों से बचाव हो जाएगा। चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. जे. के. जैन ने कहा कि चर्म रोगों से बचने के लिए हमें सब्जियाँ ज्यादा से ज्यादा लेनी चाहिए। डॉ. प्राची जैन का कहना था कि जैन आहार व शाकाहार से कैंसर की संभावना कम हो जाती है। बच्चों को मंदिर तथा गुरुओं के पास अवश्य ले जाये।

डॉ. अंशुल जैन ने कहा कि पहले टी. वी. सेट मोटे बनते थे, आदमी पतले थे अब टीवी पतले हो रहे हैं आदमी मोटे हो रहे है, जैनधर्म अपनाओ स्वास्थ्य जीवन पाओ।

डॉ.अंशुल जैन ने कहा कि बच्चों को फल अवश्य खिलाएँ

इससे मसूड़े मजबूत होते है। डॉ. राजेश जैन, डॉ. कल्याण गंगवाल, डॉ. वैभव जैन, डॉ. मनीष जैन, डॉ. पीयूष जैन, डॉ. संजय अग्रवाल, डॉ. सोगानी आदि ने मेडिकल साइंस एंड जैनधर्म पर अपने सार गर्भित प्रस्तुतिकरण दिए।

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (तीमविवि) के कुलाधिपति श्री सुरेश जैन ने आचार्य श्री से तीमविवि पधारने का निवेदन किया व वहाँ डॉक्टर कॉन्फ्रेन्स करने की बात कही। उन्होंने बताया कि सभी विद्यार्थियों को जैन मंदिर में जाने की प्रेरणा दी जाती है। पर्यूषण पर्व एवं विभिन्न जैन पर्व मनाए जाते हैं । सारा कैम्पस शाकाहारी है, बाहर से लाकर भी मांस आदि का उपयोग नहीं कर सकते है। तीमविवि के प्रशिक्षु डॉक्टर बड़ी संख्या में सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

- राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद,

आचार्य श्री शांतिसागर छाणी महाराज व उनकी आचार्य परंपरा का अवदान पर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी तिजारा, अलवर। आचार्य श्री शांतिसागर छाणी महाराज हीरक समाधि वर्ष के उपलक्ष्य में छाणी परंपरा के षष्टम पट्टाचार्य परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में 'प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर छाणी महाराज व उनकी आचार्य परंपरा का अवदान' विषय पर २३ व २४ अक्टूबर २०१९ को देहरा चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र तिजारा जिला अलवर, राजस्थान में राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन सफलता पूर्वक किया गया।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सनत जैन जयपुर रहे। इस दौरान संगोष्ठी में डॉ. शीतल चंद्र जयपुर, डॉ श्रेयांस कुमार बड़ौत, डॉ श्रेयांस सिंघई जयपुर, डॉ ब्र. अनिल प्राचार्य जयपुर, प्रो. नलिन के. शास्त्री बोधगया, डॉ सनत जैन जयपुर, ब्र. मनीष ज्ञान सराक क्षेत्र, ब्र. जयकुमार निशांत भैया टीकमगढ़, पंडित विनोद रजवांस, प्रो. कमलेश जयपुर, डॉ. ब्र. राकेश भैया सागर, डॉ. ब्र. आकाश वाराणसी, डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, डॉ ज्योति जैन खतौली, पंडित दीप चंद्र जैन छाबड़ा जयपुर, डॉ महेन्द्र मनुज इंदौर, डॉ नीलम सराफ ललितपुर, डॉ. कमलेश बसंत तिजारा, श्री राजेन्द्र महावीर सनावद आदि विद्वानों ने विभिन्न सत्रों में अपने आलेख प्रस्तुत किये। संगोष्ठी के सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः डॉ शीतलचंद्र जयपुर, डॉ. ब्र. राकेश सागर, डॉ श्रेयांस बड़ौत ने की।

संगोष्ठी के सत्रों का संचालन क्रमशः डॉ. सनत जयपुर, डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, पंडित विनोद रजवांस ने किया। संगोष्ठी के निर्देशक डॉ शीतलचंद्र जी जैन जयपुर व डॉ श्रेयांस कुमार जी जैन बड़ौत रहे। उल्लेखनीय है कि सराकोद्धारक, षष्टम पट्टाचार्य आचार्य श्री १०८ ज्ञान सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से यह वर्ष आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज के समाधि हीरक महोत्सव वर्ष के रूप में पूरे देश में विविध आयोजनों के साथ मनाया जा रहा है ।

उन्होंने बाल विवाह, मृत्यु के पश्चात महिलाओं द्वारा छाती कूटने की प्रथा, मृत्युभोज जैसे अनेक सामाजिक बुराइयों को जड़मूल से उखाड़ने में बहुत योगदान दिया। संगोष्ठी में विद्वानों ने कहा कि आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी श्रमण संस्कृति की परंपरा का समर्थ

और सशक्त संबल प्रदान करने वाले ऐसे मुनिराज रहे जिन्होंने अपनी साधना, तपस्या एवं ज्ञान की त्रिवेणी में जन-सामान्य को अवगाहन कर जैनधर्म और दर्शन के नवचिंतन को नवाकृति प्रदान की थी।

उन्होंने न केवल श्रमण परम्परा के पुनरुत्थान में उल्लेखनीय योगदान दिया, अपितु एक गौरवशाली शिष्य परंपरा की भी अविच्छिन्न श्रृंखला प्रदान की। छाणी परंपरा में आचार्य सूर्य सागर जी का विशेष उल्लेखनीय रहा है। इस अवसर पर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य शांति सागर जी चारित्र चक्रवती और आचार्य शांति सागर छाणी दोनों सूर्यों का उदय समकालिक हुआ । जिनकी परम्परा से आज हम मुनिराजों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। दोनों आचार्यों ने भारत भर में मुनि धर्म व मुनि परंपरा को बढ़ाया है । यहाँ तक की व्याबर (राजस्थान) में दोनों का ससंघ एक साथ चातुर्मास भी हुआ था । सन १९३३ में आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी और आचार्य श्री शांतिसागर जी दक्षिण दोनों आचार्यों का ब्यावर में एक साथ वर्षा योग हुआ जिससे एक नया इतिहास बना। दोनों संतों का वात्सल्य भाव आज सभी के लिए अनुकरणीय है। धार्मिक, सामाजिक मूल्यों और परंपराओं की रक्षा, उनका व्यवस्थापन एवं सम्वर्द्धन में आचार्यश्री का अमूल्य योगदान रहा है। इस संगोष्ठी के माध्यम से छाणी महाराज और उनकी परंपरा के बारे में अनेक नए तथ्य विद्वानों ने उद्घाटित किये हैं।

- डॉ. सुनील जैन संचय

गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्र /छात्राएँ होते हैं संस्कारी एवं प्रतिभावान अपने बालक/बालिकाओं को हिन्दी माध्यम में कराएँ दाखिला

कौन कहता है कि गुरुकुलों में तथा हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले छात्र कमजोर होते हैं? आज मैंने उन छात्र/छात्राओं से साक्षात्कार किया जो बीस तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि की निर्माण भूमि शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी पर्वत राज की यात्रा के क्रम में आपस में शास्त्र ज्ञान की बातें करते जा रहे थे। मैंने उनके साथ मित्रता कर हम भी उनक बातों में घुलमिल गये और यात्रा संपन्न की।

गणिनी आर्यिका १०५ श्री ज्ञानमति माताजी की पावन प्रेरणा से संचालित हस्तिनापुर के गुरूकुल में अध्ययनरत ९६ छात्रों में से ६० छात्रों के साथ प्राचार्य श्री राजीव जी जैन से हमारी मुलाकात श्रीपार्श्वनाथ टोंक पर हुई। गुरूकुल की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर मैंने धन्यवाद दिया उन शिक्षकों को जो इतने लगनशील होकर बच्चों को स्तरीय शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा पर बड़ागांव बागपत के गुरुकुल से आया ५० बालिकाओं का समूह एवं हस्तिनापुर गुरुकुल से ६० छात्रों का समूह

बड़ागाँव बागपत से गुरूकुल का एक ५० बालिकाओं का समूह भी शाश्वत तीर्थ की वंदना कर रहा था, उन बालिकाओं से उनकी शिक्षा व्यवस्था के बारे में जानकारी से भी बहुत प्रभावित हुए, इन बालक/ बालिकाओं ने यह असत्य साबित कर दिया कि अधिकांश लोगों की मानसिकता होती है कि गुरूकुल में वह छात्र/छात्राएँ होते हैं जो गरीब परिवार से होते हैं अथवा कमजोर दिमाग के होते हैं।

आगे जाकर डाक बंगले पर एक ग्रुप में छोटे-छोटे बच्चे वहाँ ड्यूटी पर तैनात आर्मी जवानों से बातचीत करते हुए देखा। उनकी बातों से हमारे साथ वह सुरक्षा गार्ड भी काफी प्रभावित हुए। हमें बहुत हर्ष हुआ कि गुरूकुलों में भी इतने होशियार बच्चे होते हैं।

जैन समाज के समाजसेवियों से अनुरोध करते हैं कि देश भर में अधिक से अधिक गुरूकुल की स्थापना कर अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम से अध्ययन कराते हुए संस्कार वान बनायें।

- देवेन्द्र कुमार जैन

वर्षायोग के समापन पर निकली मंगल कलशों की शोभायात्रा

खुरई। मुनि संघ के चातुर्मास के निष्ठापन पर ब्रह्मचारी नितिन भैया के मार्गदर्शन में कलश स्थापना करने वाले स्थानीय श्रद्धालुओं का सम्मान प्राचीन जैन मंदिर के व्यवस्थापकों के द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंगल कलशों को हाथ में लेकर शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा में सबसे आगे प्रथम कलश को लेने वाले ताराचंद रोड़ा परिवार एवं तृतीय कलश को लेने वाले जयकुमार मुल्ला परिवार चल रहा था। शोभायात्रा का शुभारंभ प्राचीन जैन मंदिर से हुआ जो मिडटाउन चैराहे से होती हुई आदिनाथ जिनालय से मंगल कलश को स्थापित करने वाले रोड़ा परिवार के निवास पर पहुंची। वहां पर नगर के श्रेष्ठीद्वय ने तिलक लगाकर मंगल कलश लेने वालों का सम्मान कर गृह प्रवेश कराया। तदोपरांत शोभायात्रा झंडा चैक पर जयकुमार मुल्ला के निज निवास पर पहुँची वहाँ पर श्रद्धालुओं ने मंगल कलश की

आरती उतारकर स्वागत किया। अशोक शाकाहार ने बताया कि शेष कलशों का आवंटन पिच्छिका परिवर्तन समारोह पर मुंगावली, शिवपुरी, जबलपुर, पथरिया आदि स्थानों के कलशाधारियों को मुनि संघ के सान्निध्य में प्राप्त होगा।

द्विशताधिक विद्वानों की उपस्थिति में अधिवेशन एवं संगोष्ठी सम्पन्न

देव-शास्त्र-गुरु की संरक्षक –विद्वत्परिषद : निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

बिजौलियां (राज.)। श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् (रजि.) के तत्त्वावधान में परम पूज्य निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज, मुनि श्री महासागर जी महाराज, मुनि श्री निष्कंपसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री गंभीरसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री धैर्यसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन तपोदय तीर्थ क्षेत्र, बिजौलियां, जिला-भीलवाडा (राज.) में डॉ. जयकुमार जैन एवं प्रो. अरुण कुमार जैन के निर्देशन तथा प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन (उदयपुर) के संयोजकत्व में आचार्य श्री यतिवृषभ विरचित तिलोयपण्णती परिशीलन राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी दि. ५-७ अक्तूबर २०१९ को संपन्न हुई और प्रा. अरुण कुमार जैन की अध्यक्षता तथा कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती के महामंत्रित्व में विद्वत्परिषद् का खुला अधिवेशन ८ अक्टूबर २०१९ को सम्पन्न हुआ। इसमें द्विशताधिक विद्वानों एवं विदुषियों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर पुरस्कार (राशि ११ लाख रु) से पं. रतनलाल बैनाड़ा को सर्वश्री लाभचन्द, मनोज कुमार, संजय कुमार, विकास कुमार पटवारी, बिजौलियां ने पुरस्कृत किया। महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर पुरस्कार (राशि ५४ हजार रु) से प्रो. कमलेश कुमार जैन (जयपुर), मुनिपुंगव श्री सुधासागर पुरस्कार (राशि ५१ हजार रु.) से कवि श्री चन्द्रसेन जैन (भोपाल) को श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट, सूरत की ओर से श्री ज्ञानेन्द्र जैन-श्रीमती मधु गदिया ने सम्मानित किया।

श्रमण संस्कृति एवं तीर्थ संरक्षण पुरस्कार (राशि ५४ हजार रु) से डॉ. शैलेष कुमार जैन शास्त्री (सांगानेर) को श्री अजय कुमार जैन, अनय जैन, नई दिल्ली की ओर से पुरस्कृत किया गया।

इसी क्रम में क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार से डॉ. राकेश कुमार जैन, साहित्याचार्य (जयपुर) तथा डॉ. सुनील कुमार जैन संचय (ललितपुर) एवं पं. गोपालदास वरैया स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार से डॉ. योगेश कुमार जैन (लाडनू) तथा डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन (जयपुर) को ४४-४४ हजार रु. की पुरस्कार राशि, प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्र, पगड़ी के साथ श्री राजेन्द्र नाथूलाल जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट सूरत की ओर से श्री ज्ञानेन्द्र जैन- श्रीमती मधु गदिया ने सम्मानित किया।

अधिवेशन के मध्य डॉ. रमेशचन्द जैन द्वारा अनुदित 'जैनधर्म का सार' तथा 'अत्तिमब्बे तथा चालुक्य', मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज द्वारा द्वार प्रदत्त जिज्ञासाओं के समाधान पर आधारित डॉ. शैलेष कुमार जैन द्वारा संपादित 'जिज्ञासा समाधान, भाग-२', डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन द्वारा संस्कृत छाया तथा हिन्दी अनुवाद से युक्त 'भगवदी आराहणा, ब्र. जयकुमार जैन द्वारा लिखित अध्यक्षीय व्याख्यान, डॉ. धर्मेन्द्रकमार जैन द्वारा पाण्डुलिपि सम्पादित एवं हिन्दी अनुवादित 'दंसणकहरयणकरडु आदि कृतियों का विमोचन किया गया। प्रतिष्ठाचार्य पं. पवन दीवान ने अपने द्वारा संकलित भक्ति साहित्य मुनि श्री को भेंट किया।

अधिवेशन का मुख्य विषय जैन विवाह में आगत कुरीतियाँ एवं उनके निराकरण के उपाय रखा गया था। जिस पर विद्वानों-विदुषियों ने गहन चर्चा की। चर्चा करने वालों में डॉ. कल्पना जैन, आगरा, डॉ. ज्योति जैन, खतौली, पं. राजेन्द्र कुमार जैन 'सुमन', सागर, पं. जितेन्द्र जैन, कोटा, पं. पवन दीवान, मुरैना, पं. राज कुमार जैन, सागर, पं. सुखदेव जैन, सागर, प्रो. कमलेश कुमार जैन, जयपुर, पं. राजकुमार जैन, जबलपुर, पं. ऋषभ चन्द जैन, जयपुर, पं. कमल कुमार जैन, कोलकाता, पं. श्रुति जैन, पिंडरई, पं. चन्द्र प्रकाश जैन 'चन्दर', ग्वालियर आदि प्रमुख थे। सभी वक्ताओं ने मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज की प्रेरणा से प्राचीन विवाह पद्धति पर आधारित 'चक्रवर्ती विवाह' करने-कराने के पक्ष में विचार व्यक्त किए।

चक्रवर्ती विवाह पद्धति में कन्या एवं वर द्वारा उपवास पूर्वक जैन मन्दिर में विधान एवं हवन के उपरांत सात फेरे लेकर वैवाहिक जीवन जीने की प्रतिज्ञा की जाती है। इसके पश्चात सात दिन तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए सिद्धक्षेत्र की वंदना की जाती है। इसके पश्चात वे देव-शास्त्र-गुरु वंदना कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं। अधिवेशन में समागत सभी विद्वानों को सम्बोधित करते हुए मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि 'तीर्थंकर स्वयं तो अनुमान के आधार पर दीक्षा ले लेते हैं किन्तु दूसरों को उस मार्ग पर तब तक नहीं चलाते जब तक वे स्वयं उस मार्ग और धर्म का प्रत्यक्ष साक्षात्कार नहीं कर लेते। उन्होंने कहा कि कुन्दकुन्दान्वय की परम्परा ही जैनधर्म की मूल परम्परा है। विद्वानों को अपनी प्राच्य मूल परम्परा का निर्वहन एवं संरक्षण करना चाहिए। उनके आचरण, खानपान और वेशभूषा में भी मूलसंघ की परम्परा झलकना चाहिए। एक ओर विद्वानों को आचार्य श्री कुन्दकुन्द, उमास्वामी, समन्तभद्र, आचार्य श्री शांतिसागर, आचार्य श्री विद्यासागर आदि श्रमणों की चर्या का अनुकरण करना चाहिए वहीं यदि विद्वानों की दृष्टि से भी देखें तो उन्हें पं.आशाधर जी, पं.टोडरमल जी, पं.बनारसीदास जी की परम्परा का अनुकरण करना चाहिए। आज साधुओं तक को जाति के चश्मे से देखा जाने लगा है जो अनुचित है। साधु तो मात्र श्रद्धेय होता है और वह भी वीतरागता के कारण। हम उनके इसी वीतरागी गुण का अनुकरण करें। मेरा सभी विद्वानों को आशीर्वाद है कि वे चारित्र को अंगीकार करें और विद्वान के रूप में अपने ज्ञान से, आचरण से समाज को प्रभावित करें।'

-डॉ. सुरेन्द्रकमार जैन 'भारती'

बड़ा तीर्थयात्रा संघ पहुँचा शिखरजी, दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट - मधुबन के महामंत्री ने किया स्वागत

श्री दिगम्बर जैन मुनि सेवा समिति - शक्ति नगर, दिल्ली द्वारा आयोजित श्री सम्मेदशिखरजी की ७वीं यात्रा के लिए पूरे भारतवर्ष से ४१०८ यात्रियों के दिनांक ११ अक्टूबर २०१९ को पधारने पर समिति के मुख्य यात्रा संयोजक श्री पवन जैन गोधा एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों व पदाधिकारियों सदस्यों का स्वागत श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट - मधुबन के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा – हजारीबाग ने किया। यह यात्रा संघ १४ अक्तूबर २०१९ तक शिखरजी में रहा।

सम्मेदशिखर जी में बिछुड़े परिजन मिले

सम्मेद शिखरजी में आयोजित शिविर के दौरान श्री महेन्द्र कुमार जैन जबलपुर वाले ७ अक्तूबर २०१९ को बिछुड़ गये थे। जो तिजाराजी अतिशय क्षेत्र (राजस्थान) में जबलपुर की एक बेटी को १७ अक्टूबर २०१९ को मिले तो उसने महेन्द्र कुमार जी से पूछा कि चाचाजी, आप यहाँ कैसे? महेन्द्र कुमार जी ने कहा कि बिटिया मैं भटक गया हूँ, मेरे घर वालों को सूचना दे दो, वे मुझे तिजारा जी से ले जाएँ। बिटिया ने तुरन्त ही उनके निवास पर फोन लगाया और शुभ समाचार प्रेषित किया।

परिवार ने मधुबन पुलिस के डीएसपी श्री नीरज सिंह एवं टीआई, रेल्वे प्रबंधन, श्री अभय जैन, प्रबंधक तारण भवन, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों आदि आभार माना।

- दीपकराज जैन, छिंदवाड़ा

परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुशिष्य मुनिश्री कुंथुसागर जी एवं ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री सम्मेदशिखरजी में सम्पन्न होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव

लगातार होंगे विभिन्न मंदिरों के तीन माह में तीन पंचकल्याणक

शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी की पावन धरा पर स्थित गुणायतन में विराजमान परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य १०८ श्री विद्यासागर जी महाराज के सुशिष्य मुनि १०८ श्री कुंथुसागर जी महाराज एवं ऐलक १०५ श्री सिद्धांतसागर जी महाराज के परम सान्निध्य में तथा बा. ब्र. राकेश 'भैयाजी' सागर, बा.ब्र. अरूण 'भैयाजी'' बा.ब्र. संजीव 'भैयाजी' कटंगी के मार्गदर्शन एवं प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. श्री धीरज ''भैयाजी' राहतगढ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जैन काँच मन्दिर जी के जीर्णोद्धार उपरांत नवीन दो वेदियों पर ३३ जिन प्रतिमाओं का पंचकल्याणक एवं शिखर पर कलशारोहण का भव्य आयोजन दिनाँक १६ से २१ नवम्बर २०१९ तक गुणायतन परिसर में सम्पन्न होने जा रहा है।

द्वितीय पंच कल्याणक महोत्सव ०६ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक बा.ब्र. श्री अजित 'भैयाजी' द्वारा निर्मित पद्मप्रभ जिनालय के अंतर्गत श्रीमज्जिनेन्द्र १००८ श्री अजितनाथ समवशरण मंदिर का पंच कल्याणक भी इन्हीं संतों के परम सान्निध्य में सुनिश्चित हुआ है।

तृतीय प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य आर्यिका ज्ञानमति माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित शांतिधाम जिनालय का पंचकल्याणक दिनाँक २० जनवरी से २६ जनवरी २०२० में निहारिका के वात्सल्य भवन में विराजमान परमपूज्य १०८ आचार्य श्री अनेकांत सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में होने जा रहा है। इन महाआयोजनों में इस धर्मनगरी में सभी राज्यों से धर्मप्रेमी श्रद्धालु धर्माराधना करते हुए धर्मगंगा में डुबकी लगाकर अपने मानव जीवन को सार्थक तथा पवित्र करते हुए पुण्य का संचय करने के लिये सम्मिलित रहेंगे।

आप भी मन बनायें इस शाश्वत धाम पर होने जा रहे इन महाआयोजनों में पधारने का, जहाँ होगें 'एक पंथ तीन काज' प्रथम लाभ शाश्वत तीर्थराज की मंगलयात्रा, तो दूसरी ओर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आनंद और साथ ही साथ तीसरा लाभ लेंगे अनेक पिच्छीधारी संतों के एक साथ दर्शन का !

-देवेन्द्र कुमार जैन, सम्मेदशिखरजी

धर्म नगरी औरंगाबाद में अनोखा सराहनीय आयोजन ...

चिकलठाना (औरंगाबाद) : चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर में आर्यनंदी कॉलोनी औरंगाबाद में पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में क्षमावाणी के समय एक अनोखा एवं सराहनीय परिवार सम्मेलन का आयोजन किया गया। दादा-दादी, और माता-पिता का अनोखा आदर-सम्मान का यह भव्य-दिवस समारोह आर्यनंदी परिसर एवं औरंगाबाद संभाग में चर्चा का विषय बन गया। भव्य आकर्षक रंगोली उकेरी गयी थी। इस अवसर पर श्री संदीप ठोले, श्री अमित अजमेरा, श्री अरुण पाटनी, श्री नीलम पाटनी, श्री मंजू ठोले, श्री विजय अजमेरा, श्री माणिकचंद सेठी, श्री भरत ठोले, श्री कविता पाटनी आदि उपस्थित थे।

जंगलवाले बाबा मुनि श्री चिन्मयसागर जी का समाधि मरण

दिनांक १८ अक्टूबर २०१९ कार्तिक कृष्ण पंचमी को शाम ०६: १८ पर परम पूज्य आचार्यश्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य जंगल बाले बाबा मुनिश्री १०८ चिन्मयसागर जी महाराज के रूप में श्रमण संस्कृति का एक और नक्षत्र अस्त हो गया। आपने १२ अक्टूबर२०१९ चतुर्दशी के दिन यम सल्लेखना धारण की थी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचन्द्र जैन मुंबई जो कि १६ अक्टूबर २०१९ को महारज श्री का आशीर्वाद प्राप्त करने जुगल पहुंचे, तब मुनिश्री चेतन अवस्था में थे। मुनिश्री की चर्या तो जग-जाहिर है, अध्यक्ष महोदय उनकी चर्या को देखकर बहुत प्रभावित हुए मुनिश्री के चरणों में माथा टेककर भावुक मन से आशीर्वाद प्राप्त किया एवं उनकी उत्कृष्ट समाधिमरण की प्रार्थना की।

मुनिश्री चिन्मय सागर जी महाराज अपने आप में अनोखे साधक थे। उनके विहार बीहड़ जंगलों, पिछड़े गांवों और आदिवासियों के मध्य बहुत होते थे। मुनि चिन्मय सागर जी के दिगंबर स्वरूप, तप और ध्यान के प्रचंड प्रभाव ने उन सभी को आपका भक्त बना दिया। मुनिश्री ने उन्हें नमोकर मंत्र सिखाया, उन्हें मद्य मांस के त्याग संकल्प दिला कर शुद्ध शाकाहारी बनाकर उन्हें जिन धर्म का अनुयाई बना दिया। इस प्रकार के उनके भक्तों की संख्या भी लाखों में है। मुनि श्री चिन्मय सागर जी सिर्फ जंगल में नहीं रहते थे बल्कि इस जगत को ही जंगल समझते थे। हम सभी इस संसार के राग-द्वेष मोह-क्रोध-मान-माया-लोभ के बीहड़ जंगल में जंगली बन कर रह रहे हैं। दरअसल वे हम जंगलियों को धर्म सिखाने वाले बाबा थे इसलिए जंगल वाले बाबा थे।

अध्यक्ष महोदय ने मुनि श्री के चरणों में माथा टेककर अंतिम दर्शन करते हुए मुनिश्री की मोक्ष यात्रा पूरी होने की कामना की।

तिजारा में अखिल भारतीय जैन डॉक्टर डायरेक्टरी का प्रकाशन

अखिल भारतीय जैन डॉक्टर निर्देशिका का विमोचन करते हुए संपादक डॉ. सन्मति ठोले (औरंगाबाद), डॉ. सुहास शहा (मुंबई), डॉ. जी. सी. जैन (जयपुर) एवं डॉ. के. एम. गंगवाल (पुणे)

अखिल भारतीय जैन डॉक्टर सम्मेलन, तिजारा (राजस्थान)। २० अक्टूबर २०१९ को भारी उत्साह से संपन्न हुआ। सम्मेलन में विश्व जैन डॉक्टर्स फोरम के अध्यक्ष डॉ. सन्मति ठोले, औरंगाबाद द्वारा संपादित अखिल भारतीय जैन डॉक्टर निर्देशिका का प्रकाशन भारी उत्साह से संपन्न हुआ है।

इस निर्देशिका में देशभर के सभी प्रांतों के २५००० जैन डॉक्टरों के नाम, पूर्ण पते सम्मिलित हैं। इस निर्देशिका का निर्माण १९९६ से चल रहा था। इस निर्देशिका में सुधार अभी भी चल रहा है। इस हेतु सभी जैन डॉक्टरों को अपना पूरा पता, ईमेल, मोबाईल आदि की जानकारी drsanmatithole@gmail.com पर प्रेषित कर अपना नाम निर्देशिका में दर्ज कराने की चेष्टा करें।

सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर में हुआ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज और मुनि संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह

३ नवंबर २०१९। चातुर्मास पश्चात दिगम्बर जैन संतों के संयम उपकरण पिच्छिका का प्रति वर्ष परिवर्तन किया जाता हैं। इसी श्रृंखला में आज सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज और मुनि संघ का भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित हुआ।

उक्त आशय की जानकारी देते हुए सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र के कार्यकारी अध्यक्ष संजय जैन मैक्स एवं हरदा जैन समाज के ट्रस्टी राजीव रविन्द्र जैन ने बताया कि पिच्छिका परिवर्तन के समय मुनि महाराजों को नवीन पिच्छिका देने और पुरानी पिच्छिका लेने के काफी कठिन नियम होते है।

जो श्रावक परिवार सहित इन कठोर नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करें और संयम से जीवन यापन की प्रतिज्ञा लेता है उसे ही मुनि महाराजों की पिच्छिका लेने देने का अवसर प्राप्त होता हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को आज पिच्छिका देने का सौभाग्य मात्र ३९ वर्ष के श्री अभिषेक जैन और उनकी पत्नी को प्राप्त हुआ। इस दम्पति ने आजीवन व्रत धारण कर युग श्रेष्ठ आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की पुरानी पिच्छिका लेने का सौभाग्य प्राप्त किया। साल भर मुनिचर्या का पालन करते हुए जब पिच्छी के पंख कड़क हो जाते हैं तब जीवों का घात होने लगता है, तब अहिंसा धर्म का पालन करते समय परेशानी का अनुभव होने लगता है।

अतः दया धर्म का पालन करने के लिए श्रावक जन अपने यहां साधना रत मुनियों को नवीन पिच्छिका प्रदान करते हैं। इससे दया धर्म का पालन होता रहे। इसी के साथ चातुर्मास का समापन हो जाता है। जैसे पंख आने पर पंछी उड़ जाते हैं। उसी तरह नवीन पिच्छी आने साधुओं का बिहार होने लगता है। महाराज ने कहा कि संयम बहुत दुर्लभ है। संयम का अर्थ होता है नियंत्रण जिस तरह बिना ब्रेक की गाड़ी होती है। संयम धारण करने वाले संसार में विरले होते हैं। संयम दो प्रकार का होता है- प्राणी संयम और इंद्रिय संयम।

विद्यासागरजी ने नुकसान बताए तो सैकड़ों लोगों ने लिया प्रण- सप्ताह में १ दिन मोबाइल नहीं चलाएंगे

मैंने यह कार्य किया ऐसा मत कहो। काम तो सब हो रहे हैं बस अपने-अपने दायित्व निभाते जाओ। संकल्प और विकल्पों की आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिए। संयोजना सही होती है तो कार्य भी उसी के अनुरूप होता जाता है। ये प्रेरणादायी उद्गार नेमावर में विराजमान आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने चातुर्मास अवधी में सेवारत कार्यकर्ताओं के सम्मान समारोह के अवसर पर व्यक्त किए।

जैन समाज के प्रवक्ता नरेंद्र चौधरी ने बताया शनिवार को प्रातःकाल की बेला में चातुर्मास अवधी में सेवारत खातेगांव, हरदा,

अजनास, संदलपुर, नेमावर बानापुरा, इंदौर के कार्यकर्ता और समाजजनों ने विद्यासागरजी की पूजा के अवसर पर उन्हें श्रीफल समर्पित किए। वहीं ट्रस्ट कमेटी ने कार्यकर्ताओं के सम्मान स्वरूप उनसे आचार्यश्री की पूजन में अष्टद्रव्य समर्पित करवाया। आचार्यश्री ने कहा आप कर्तव्य करेंगे तो सफलता निश्चित ही प्राप्त होगी। जिसका जैसा पुण्य होगा कार्य भी वैसा ही होगा यह निश्चित है। अरिहंत देव द्वारा बताई गई विधि से कर्तव्य करेंगे तो हम भी कर्म को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने में समर्थ होंगे। आप लोगों को नाम उल्लेख ज्यादा नहीं करना चाहिए। हमारा आशीर्वाद भी हमेशा कार्य के लिए होता है कर्ता के लिए नहीं।

आचार्यश्री ने मोबाइल के दुरूपयोग और भविष्य में उससे होने वाली हानियों के बारे में बताते हुए कहा कि आज विद्यालयों में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही मोबाइल के कारण अपने मार्ग से भटक रहे हैं। मोबाइल का सीमित उपयोग होना चाहिए। बच्चों को इस

अपव्यय से बचाना चाहिए, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि पहले माता-पिता स्वयं इस मोबाइल रूपी बीमारी से बचें।

बड़ी-बड़ी कंपनियों के सीईओ भी अपने बच्चों को मोबाइल के लगातार प्रयोग से रोकते हैं। आज लोग गर्भ में बच्चा आते ही उनके लिए मोबाइल खरीद लेते हैं। मोबाइल के कारण खान-पान, रहन-सहन सबकुछ बिगड़ रहा है। मोबाइल समय, धन और बुद्धि तीनों को प्रदूषित कर रहा है। अतः इन सबसे बचने के लिए मोबाइल का प्रयोग सीमित करना होगा।

आचार्यश्री के वचनों से प्रेरित होकर विद्यासागर कॉलेज के संचालक श्री आलोक जैन और हरदा नगर पालिका अध्यक्ष श्री सुरेंद्र जैन सहित सैकड़ों अनुयायियों ने सप्ताह में एक दिन मोबाइल का नहीं करने का संकल्प लिया।

प्रख्यात साहित्यकार डा. सरोजकुमार लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

सतना। देश के जाने माने कवि सम्मेलन संचालक और साहित्यकार इंदौर के डॉक्टर सरोजकुमार को विगत दिनों सतना में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उनकी ६० वर्ष की साहित्य साधना के तारतम्य में यह सम्मान उन्हें प्रदान किया गया है।

जैन दर्शन के विख्यात विद्वान, प्रवचनकार, लेखक और पुरातत्वज्ञ स्वर्गीय श्री नीरज जैन की स्मृति में गठित नीरज न्यास द्वारा विगत ३ नवंबर २०१९ को सतना में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में जैन समाज के गौरव डॉक्टर सरोजकुमार जी को यह सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महात्मा गाँधी के प्रपौत्र और महात्मा गांधी फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री तुषार गांधी (मुंबई) थे तथा प्रख्यात विद्वान फिरोजाबाद के श्री अनूपचंद जैन विशिष्ट अतिथि थे।

उल्लेखनीय है कि डॉ. सरोजकुमार विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य में रुचि रखते थे और निरंतर कविताएं लिखते रहते थे। उनकी कविताएं देश की सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। मध्य प्रदेश के प्रमुख हिंदी दैनिक नईदुनिया में उनकी लिखी साप्ताहिक स्तंभ स्वांत: दुखाय की लगभग पाँच सौ कड़ियों को पाठकों ने बहुत पसंद किया है। ३५ वर्षों के महाविद्यालयीन अध्यापन से सेवानिवृत्त होने के बाद डॉ. सरोजकुमार साप्ताहिक दूरगामी आब्जर्वर के प्रधान संपादक रहे और नईदुनिया के साहित्य पृष्ठ का संपादन करते रहे। आपके तीन कविता संग्रह तथा दो ब्रोशर भी प्रकाशित हुए हैं। भारत के अलावा अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में भी सरोजकुमार जी को कविता पाठ के लिए बुलाया जा चुका है। पूज्य मुनिश्री क्षमासागर जी महाराज के सान्निध्य में सरोजकुमार जी ने जैन दर्शन की भाव-भूमि पर भी अनेक लोकप्रिय कविताएं लिखी थीं। श्री सरोज कुमार को पूर्व में भी अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

उनकी ६० वर्ष की निरंतर साहित्य साधना के फलस्वरुप

उन्हें सतना में साहित्य सेवा का लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सुधाकर जैन ने सभी का स्वागत किया तथा सुधीर जैन ने अतिथि परिचय देते हुए श्री सरोजकुमार जी की साहित्य सेवाओं का विस्तृत उल्लेख किया। श्रीमती सुषमा जैन ने सम्मान पत्र का वाचन किया। श्री तुषार गांधी, पंडित अनूप चंद्र जैन जी, पंडित निर्मल जैन तथा प्रो. राजकुमार जैन द्वारा सम्मान पत्र, शाल, श्रीफल एवं पुष्पहार से श्री सरोजकुमार का सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री सरोजकुमार ने महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती के तारतम्य में अपने उद्बोधन में बापू के कई प्रेरक प्रसंग सुनाते हुए उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सत्येंद्र शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा सिंघई संजय जैन ने आभार प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में नगर के सम्माननीय नागरिक गण, विश्वविद्यालय के उप कुलपति सहित अनेक प्राध्यापकगण, राजनेता, साहित्यकार जैन समाज के प्रमुख पदाधिकारी आदि बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

- सुधीर जैन, सतना

भगवान को चढ़ाया निर्वाण लाडू, अभिषेक और नित्य पूजन किया

बड़वानी. दीपोत्सव के अवसर पर सोमवार को जैन समाज द्वारा १००८ भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक उत्सव मनाया गया। इस दौरान स्थानीय दिगंबर जैन मंदिर सहित पार्थगरि और बावनगजाजी में भगवान को निर्वाण लाडू चढ़ाए गए। इस मौके विभिन्न आयोजन हुए। इस दौरान बड़ी संख्या में समाजजन शामिल हुए।

दि. जैन मंदिर में सुबह अभिषेक, शांतिधारा, नित्य पूजन हुआ। भगवान महावीर का पूजन और निर्वाण कांड का वाचन हुआ। पश्चात भगवान महावीर को निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। बड़वानी समाज के सदस्य मनीष जैन ने बताया कि दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा में कार्तिक कृष्ण अमावस्या दीपावली पर्व पर परम पूज्य प्रमाण सागर जी और विराट सागर जी महाराज के सान्निध्य में निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते मुनिश्री ने कहा कि कैसे भगवान महावीर ने क्षत्रिय वंश व राज परिवार में जन्म लेकर सर्वस्व त्याग कर संयम का मार्ग अपनाया और योग निरोध से पावापुरी सिद्धक्षेत्र से निर्वाण लक्ष्मी को प्राप्त किया। इसी दिन उनके प्रथम शिष्य गौतम स्वामी को सायं के समय कैवल्य ज्ञान लक्ष्मी को प्राप्त हुई। भगवान महावीर ने अपने भव्य समवशरण का भी त्याग किया। समवशरण इस संसार की सबसे सुंदर और भव्य रचना होती है। मुनिश्री ने बताया कि जिनके पास सहनन होता हैं, वो ही योग निरोध से निर्वाण को प्राप्त होता है।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में भगवान महावीर मोक्ष कल्याणक महोत्सव का आयोजन

श्री महावीरजी (जिला करौली) में विश्ववंद्य १००८ भगवान महावीर का २५४६ वाँ निर्वाण कल्याणक दिवस बहुत ही गरिमा पूर्वक मनाया गया। निर्वाण कल्याणक महोत्सव के पूर्व दिन प्रातः मंदिरजी के सामने स्थित प्रागंण में झण्डारोहण कार्यकम के साथ दो दिवसीय समारोह का शुभारम्भ हुआ।

मंगलाचरण एवं ध्वजगीत दिगम्बर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय श्री महावीरजी की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के मानद मंत्री श्री महेन्द्रकुमार पाटनी द्वारा अतिथियों का स्वागत तथा क्षेत्र की योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई। पूज्य मुनि श्री १०८ चिन्मयानन्द जी महाराज ने भी अपने प्रवचन में भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के बारे में बताया। इस कार्यकम में श्री वीर सेवक मण्डल जयपुर के सदस्यगण, क्षेत्र पर आये हुए श्रद्धालुगण, क्षेत्र के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण, दानालपुर के सरपंच, पत्रकारगण तथा स्टेशन स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

झण्डारोहण के पश्चात यंत्रराज को चॉदी की पालकी में विराजमान कर गाजे-बाजे के साथ जलयात्रा जुलूस बडा बगीचा पहुँचा।

वहॉ पर २४ कलशों की बोली हुई। सायंकाल ७.०० बजे कटला पश्चिमी पाण्डाल में भगवान की सामूहिक आरती की गई। प्रथम वेदी तथा कटला पश्चिमी पाण्डाल में एक साथ श्रद्धालुओं द्वारा निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया। उसके पश्चात सभी श्रद्धालुगण व क्षेत्र के पदाधिकारीगण गाजे-बाजे के साथ चरणचिन्ह छत्री पर गये और निर्वाण लड्डू चढ़ाया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की गतिविधियाँ

बाढ़ राहत कार्य के लिए समाज का योगदान

इस वर्ष महाराष्ट्र के सांगली, कोल्हापुर, सतारा और उत्तरी कर्नाटक में आई भयानक बाढ़ के प्रभाव से हजारों-लाखों परिवार बेघर हो गए थे। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने अपने ट्रस्ट से बाढ़ राहत के लिए यथासंभव सहायता इन क्षेत्रों में भेजी।

इस कार्य में समाज से आर्थिक सहयोग की अपील की गयी थी जिसके फलस्वरूप तीर्थक्षेत्र कमेटी को इस कार्य के लिए समाज से योगदान मिला। भारत के अनेक राज्यों से दानदाताओं ने अपनी-अपनी क्षमतानुसार राशि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के फण्ड में जमा कराई और लगभग ३३ लाख रुपये का सहयोग समाज से प्राप्त हुआ। तीर्थक्षेत्र कमेटी ने करीब ३५ लाख रुपये बाढ़ पीड़ित भाई-बंधुओं के बचाव एवं राहत में खर्च किए । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सभी दानदाताओं के प्रति आभार प्रकट करती है और आशा करती है कि समाज का सहयोग इसी प्रकार आगे भी मिलता रहेगा ।

बिजौलियाँ में साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन और तीर्थक्षेत्र कमेटी की बैठकें

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार, दिनांक १७ नवंबर २०१९ को दोपहर २.३० बजे से परम पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बिजौलियाँ, जिला-भीलवाड़ा (राज.) में रखा गया है, जो कोटा जंक्शन से लगभग ७३ किमी की दूरी पर स्थित है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के सुचारू संचालन एवं नई रणनीतियां बनाने के लिए प्रमुख बैठकें भी रखी गयी हैं, जो निम्न प्रकार हैं - १. प्रबंधकारिणी समिति की बैठक, २. पदाधिकारी परिषद की बैठक, ३. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट मण्डल की बैठक, ४. साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन।

पारसनाथ स्टेशन पर कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनों के ठहराव की माँग
तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने लिखा केंद्रीय रेल मंत्री को पत्र
स्टेशन पर शीघ्र की जाए स्वचालित सीढ़ी व लिफ्ट की सुविधा

सम्मेद शिखरजी, मधुबन (गिरीडीह). रेल यात्री सुविधा सेवा कमेटी के अध्यक्ष रमेश चन्द्र रत्न, लाल मोहन पाल, जी. सी. सेठी, सदस्य घनश्यामजी डी सी एम, आशीष कुमार अवर मंडल रेल प्रबंधक, अखिलेश कुमार पांडेय, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सोमेंद्र कुमार, राजू कुमार पी सी आई, आर पी सहाय पूर्व मध्य रेल, धनबाद पिछले दिनों सम्मेद शिखरजी के दर्शन करने आये थे।

निहारिका भवन में कलश मंदिर के दर्शन किए। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई, श्री दिगम्बर जैन शाश्वत ट्रस्ट मधुबन, श्री सम्मेद शिखर विकास समिति, प्रकाश भवन ट्रस्ट की ओर से एक एक माँग पत्र सौंपा कर मांग की गई कि पारसनाथ स्टेशन पर कुछ महत्वपूर्ण ट्रेनों का ठहराव होनी जरूरी है, जिसमे दुरंतो एक्सप्रेस,गरबा एक्सप्रेस, भुवनेश्वर व राजधानी प्रमुख हैं।

साथ ही अन्य यात्री सुविधाओं में पार्किंग क्षेत्र को बड़ा बनाना, दिव्यांगजन के लिए रेम्प, पैदल पुल का चौड़ीकरण, कैंटीन को पुनः चालू करना शामिल है।

ध्यातव्य है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात जी मुंबई ने पिछले दिनों केंद्रीय रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल को पत्र लिखकर पारसनाथ स्टेशन पर स्वचालित सीढ़ी व लिफ्ट लगवाने की माँग की है।

सभी आगन्तुकों को तिलक लगाकर दुपट्टा ओढ़ाकर स्वागत किया गया व अध्यक्ष महोदय को कमेटी की ओर से स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

इस अवसर पर सुमन कुमार सिन्हा, संजीव जैन, सुजीत सिन्हा, ए. सैदी, अशोक दास, प्रियनाथ, रोबिन बनर्जी, मुकेश पवन, सुजीत वर्णवाल, प्रेम, विष्णु कुमार, प्रदीप जैन, मधु सराक, कैलाश सिंह आदि उपस्थित थे। इसके बाद सभी पर्वत पर पारसनाथ टोंक के दर्शन करने के लिए गए।

सम्मेद शिखरजी पर्वत की वंदना करने वाले हृदय रोगियों के लिए राहत,
आपात्कालीन स्थितियों में पर्वत पर एम्बुलेंस ले जाने की मांग को प्रशासन ने दी स्वीकृति

दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार अजमेरा हजारीबाग के द्वारा प्रशासन से पर्वत पर एम्बुलेंस ले जाने की मांग की गयी थी जिसे प्रशासन द्वारा स्वीकृति दे दी गयी है। अब यात्रियों की सुरक्षा-सुविधा हेतु आपातकालीन स्थिति में एम्बुलेंस पर्वत पर ले जा सकते हैं । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट की ओर से नयी एंबुलेंस खरीदी जा रही है जो तीर्थयात्रियों की सेवा के लिए उपलब्ध रहेगी।

ध्यातव्य है कि श्री सम्मेद शिखर जी की वंदना को आये २२ वर्षीय श्री जैनम् जैन मुंबई की मृत्यु २९ अक्टूबर २०१९ को चढ़ते समय हो गई थी, जिसके कारण सभी को धक्का लगा था कि ऐसा कैसे हुआ, एंबुलेंस होती तो शायद कुछ कर पाते, उसके ३ दिन बाद ही ६७ वर्षीय श्री भँवरलाल हस्तीमल मेहता का ०४ नवंबर २०१९ को हृदयगति रुक जाने से चोपड़ाकुंड मंदिर के पास निधन हो गया था, उनकी घर्मपत्नी श्रीमती मंजुला भंवरलाल मेहता साथ में थी। मृत्यु की सूचना श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा - हजारीबाग को किसी माध्यम से पर्वत से ही प्राप्त होते ही उन्होंने तुरंत भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी शाखा कार्यालय के प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा, उप प्रबंधक देवेंद्र जैन, कमेटी के जनसंपर्क अधिकारी श्री पवनदेव शर्मा एवं ट्रस्ट के प्रबंधक श्री संजीव जैन को निर्देश दिए गए कि शीघ्रता से मृतक के शव को नीचे धर्मशाला में लाने की व्यवस्था करें एवं उनके परिवार को हर संभव सहायता करें।

पर्वत के नीचे शिखरजी में एक स्वास्थ्य केंद्र दीपक फाउंडेशन का है, उनके पास से एम्बुलेंस श्री पवन शर्मा ने मँगवायी, उसे लेकर सभी पर्वत पर गये। शव को गन्धर्व नाले तक भिजवाया पुन्हः एम्बुलेंस से सरकारी अस्पताल पीरटांड लेकर गये, साथ ही इसकी सूचना प्रशासन को दी व शव को सुरक्षित रखने के लिए शिखरजी से २७ किलोमीटर पर स्थित गिरिडीह जिला से रोटरी क्लब के माध्यम शव फ्रीजर बॉक्स (डैड बॉडी फ्रीजर बॉक्स) मंगाया गया था । उल्लेखनीय है कि पर्वत पर वंदना मार्ग में इस वर्ष ८ से १० लोगों की मृत्यु हृदय गति रुकने से हो चुकी है।

इस प्रकार की घटनों से बचने के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट ने यदि प्रशासन से पहाड़ पर वाहन ले जाने की अनुमति माँगी थी ताकि बीमार यात्री को समय पर नीचे लाकर उपचार दिया जा सके अथवा बड़े अस्पताल तक भेजा जा सके। अभी तक डोली का ही उपयोग किया जाता रहा है। अब विशेष हृदय-उपचार एंबुलेंस (कार्डियो एंबुलेंस) के आ जाने से आपात्कालीन स्थिति में यात्रियों की जान बचाने में मदद मिलेगी। यात्रियों की सुविधा के लिए यह एंबुलेंस प्रतिदिन डाक बंगले पर उपलब्ध रहेगी और शाम को मधुबन वापस आ जाएगी।

एंबुलेंस की अनुमति मिलने से शिखर जी आने वाले यात्रियों को राहत मिली है, सभी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात चंद्र जैन, कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा व शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार अजमेरा के प्रति आभार व्यक्त किया है।

सम्मेदशिखर जी पर्वत पर टोंकों को श्वेत रंग से किया जा रहा सुसज्जित

श्री सम्मेदशिखरजी – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत पर अनेक विकास कार्य करवाये जा रहे हैं। सम्पूर्ण पर्वत पर धार्मिक सूक्तियों के लगभग १५० बोर्ड लगाये गये हैं। चन्द्रप्रभ टोंक की सीढियां सकरीं होने से तीर्थयात्रियों को दर्शन करने में तकलीफ होती थी अब वह सीढियां चौड़ी करा दी गईं हैं। पर्वत पर बने यात्री शेडों का नवीनीकरण करा दिया गया है तथा अनेक जगह खतरनाक मोड़ों पर रैलिंग लगायी गयी है। श्री पार्श्वनाथ टोंक के समीप बने काउन्टर का नवीनीकरण एवं पोर्टा केबिन को दुरूस्त कराया गया है।

वर्तमान में टोंकों पर श्वेतरंग से पुताई करवाई जा रही है। टोंकों की धवलता को देखकर तीर्थयात्री प्रसन्न हो रहे हैं।

-देवेन्द्र कुमार जैन, सम्मेदशिखरजी

आचार्य कुंदकुद भगवान की जन्मभूमि कोनाकुंडला के विकास हेतु कलेक्टर ने दिलाया भरोसा

अनंतपुर (आँध्र प्रदेश). ८ नवंबर २०१९. भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात जैन व कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र गोधा निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि कोनाकुंडला के रससिद्दलागुट्टा पहाड़ की ४२.७९ एकड़ की भूमि शीघ्र तीर्थक्षेत्र कमेटी को मिले ताकि आचार्य कुंदकुंद देव की जन्मभूमि का विकास किया जा सके।

पहाड़ पर दिगंबर जैन मंदिर, धर्मशाला व आचार्य कुंदकुंद स्मारक बनाने के लिए भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई ने आंध्र प्रदेश सरकार और कलेक्टर को एक निवेदन भेजा है. अनंतपुर के कलेक्टर ने वज्रकरूर तहसील के मंडल तहसीलदार इस तीर्थ की

पूरी जानकारी भेजने के लिए निर्देश जारी किया था, जिसके बाद वज्राकरूर तहसीलदार ने कलेक्टर के लिए कोनाकुंडला जैन क्षेत्र और भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई से प्राप्त निवेदन पर कलेक्टर को रिपोर्ट भेज दी है.

७ नवंबर २०१९ को कमेटी के श्री सुरेश जैन ने इस आशय का पत्र लेकर अनंतपुर जिले के कलेक्टर श्री सत्यनारायण जी (आईएएस) से उनके निवास पर जाकर भेंट की और तहसीलदार द्वारा प्रेषित पत्र की प्रति कलेक्टर को प्रस्तुत की। कलेक्टर महोदय ने आश्वासन दिया है कि आंध्र प्रदेश सरकार से मैं निवेदन करूंगा कि कोनाकुंडला के जैन तीर्थ क्षेत्र की ४२.७९ एकड़ भूमि भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी मुंबई को सौंपकर उन्हें क्षेत्र के विकास की अनुमति दी जाए, मैं पूर्ण रूप से मदद करूंगा। उन्होंने आवश्यक कार्यवाही के लिए उस पत्र को आगे प्रेषित भी कर दिया है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल का शपथग्रहण समारोह संपन्न

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की कार्यकारिणी का शपथविधी समारोह व प्रथम बैठक परमपूज्य सारस्वताचार्य श्री देवनंदी महाराज के मंगल सानिध्य में 'णमोकार तीर्थ' मालसाणे नाशिक, में संपन्न हुआ, यह जानकारी महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री संजय पन्नालाल पापडीवाल (औरंगाबाद) ने दी।

इस कार्यक्रम में भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाडिया मुंबई, प्रमुख अतिथि राष्ट्रीय मंत्री श्री नीलम अजमेरा उस्मानाबाद, पूर्व महामंत्री श्री संतोष पेंढारी नागपूर, श्री डी. यू. जैन मुंबई, श्री प्रमोद कासलीवाल पूर्व अध्यक्ष महाराष्ट्र प्रांत, श्री विमलचंद सोगानी इंदौर, श्री सुमेर कुमार काला, अध्यक्ष मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र व जीएसटी अतिरिक्त आयुक्त ठाणे आदि मान्यवर उपस्थित रहे।

इस अवसर पर महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री संजय पापडीवाल ने सभी का स्वागत किया और पूरे महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी की कार्यकारिणी की घोषणा की। उन्होने अपना आरंभिक वक्तव्य दिया और सभी कार्यकारिणी सदस्यों को तीर्थक्षेत्र कमेटी मे सदस्य बढाने का आग्रह किया ताकि भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को सक्षम बनाया जा सके। सिध्दक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र, तीर्थक्षेत्र प्राचीन मंदिरोंके संरक्षण, संवर्धन जीणोद्धार विकास पर ध्यान देना बहुत जरुरी है, यह अपनी अनमोल धरोहर है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई द्वारा कोल्हापूर, सांगली, सातारा क्षेत्र में बाढ़ पीड़ितों के लिए लगभग ३५ लाख रुपये की सहायता की गयी है। औरंगाबाद खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत द्वारा १० लाख रुपये की सहायता की गयी है।

सभी सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीर्थक्षेत्रों के अध्यक्ष महामंत्री कमेटी में सदस्य होंगे और कुछ सदस्यों को कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में नियुक्त किया गया है। सभी प्रमुख अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किये। परमपूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य श्री देवनन्दिजी महाराज ने सभी को तीर्थक्षेत्र संवर्धन, संरक्षण, परंपराओं का पालन करने का संकल्प दिलाया। समारोह में आचार्य विद्यानंदजी की को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

Inscriptions 'hiding in plain sight' unearthed

Research student discovers 2 inscriptions in Samse basadi while on a visit

Sep 19, 2019 , A postgraduate doctoral degree (Phd) student of the Kannada University, Hampi, has discovered two previously unpublished inscriptions in a basadi (Jain temple) in Samse village of Chikkamagaluru. Both the inscriptions were found on the pedestals inside the sanctum sanctorum of the Bhagwan Shantinatha Basadi. Samse is a popular tourist destination and the area is home to many ancient basadis. Samse, in Mudigere is 10 kilometre from Kuduremukh.

Ms. Supreetha KS is pursuing a Phd in the Ancient History and Archaeology department of the University. She was on a field visit to Samse when she made the discovery.

One of the inscriptions, based on the style of the Kannada script, is said to be from the 15-16th Centuries. The other inscription has a date mentioned in the Saka era (1782) which in the Common Era is 1860 CE, a relatively newer inscription. Historian Shri Ravikumar Navalagunda who deciphered the inscriptions said, “Many inscriptions are hiding in plain sight. In this case, it was inside the sanctum sanctorum.

Even people who visit a temple or basadi regularly would never venture into the sanctum. Only the priests are privy to what is inside. For most of them, these inscriptions would be something they would have seen everyday of their lives, so not surprising. If not thousands, a hundred more such inscriptions are waiting to be discovered.”

Ms. Supreetha explained the two inscriptions. “Both are what we call the 'padapeetha' (pedestal) inscriptions. They are from different times that can be determined from the mention of the year in one of them and from the style of the script in the other. The inscription from the 15-16th Century mentions one Padumanna Shetty of Simhagadde, son of Thimma Shetty, the son of Belli Shetty of Bhayanahalli who gifted the pedestal for the idol of the '24th Teertankaras'. The inscription is inscribed on all four sides of the pedestal. There is no mention of a date in this inscription. In the end it pays homage to Vardhamana Teerthankara of Hosapattana,” she said.

“Both are 'padapeetha' (pedestal) inscriptions. They are from different times that can be determined from the mention of the year in one of them the script in the other”

–Supreetha KS

“The second inscription, is also significant. It is inscribed on a brass 'shrutaskanda' plate. It mentions the Heggade of Samse installing an idol. The shrutaskanda itself is an important aspect of the Jain religion. It is also called the 'Saraswati'. It is equvilant to the 'aagamas' in Hindu religion. The shrutaskandas represents the Jain 'aagama' tradition and how rituals are to be performed. The same rituals mentioned in this inscriptions is still carried out in this basadi,” Supreetha said.

Two other inscriptions were discovered in this basadi recently. “The discovery would not have been possible without the support of the priest Nitin Kumar SV and the patron Sudarshan Shetty,” Supreetha said. There was no way the pedestals would be allowed to move out of the Sanctum. The priest and Shetty permitted it to be photographed so that it could be deciphered.

From: Mirror

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

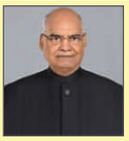

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

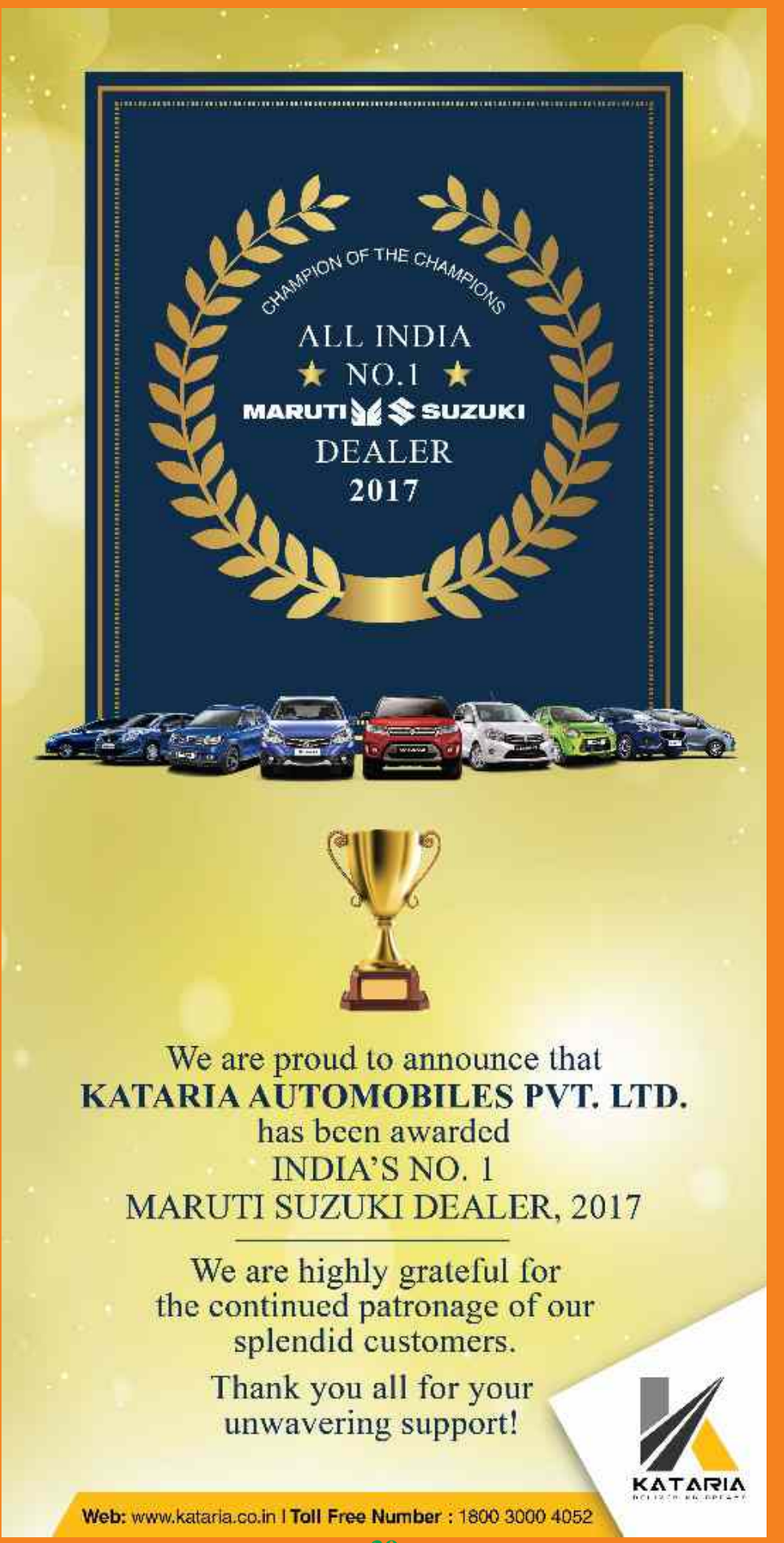
CHAMPION OF THE CHAMPIONS
ALL INDIA
NO.1
MARUTI SUZUKI
DEALER
2017
We are proud to announce that
KATARIA AUTOMOBILES PVT. LTD.
has been awarded
INDIA'S NO. 1
MARUTI SUZUKI DEALER, 2017
We are highly grateful for
the continued patronage of our
splendid customers.
Thank you all for your
unwavering support!
KATARIA
Web: www.kataria.co.in | Toll Free Number : 1800 3000 4052

Published on 16th of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019
Jain Tirthvandana, English-Hindi November 2019
at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office,
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

RNI-MAHBIL/2010/33592

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

'प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उमानाथ रामअजोर दुबे, मालिक-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004
द्वारा - त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004. से मुद्रित कर
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004 से प्रकाशित किया गया है।'